कोटद्वार,शुक्रवार
17 मई 2024
वर्षः 46
अंकः 27 पृष्ठः 8
मूल्यः 2.00
RNI No.UTTHIN/2005/16338

जयन्त

निर्भीक – निष्पक्ष – जनसरोकार

www.dainikjayantnews.com
स्थापित 1979
संस्थापक : स्व. नरेन्द्र उनियाल

डाक पंजीयन पी.ए.ओ.07-2024-26 फोनः 9412081969 email: nagendra.uniyal@gmail.com

एक नजर

सेना ने जम्मू–कश्मीर के तंगधार सेक्टर में एलओसी पर घुसपैठ की कोशिश नाकाम की, दो आतंकवादी ढेर

श्रीनगर ,सेना ने गुरुवार को जम्मू–कश्मीर के कुपवाड़ा जिले के तंगधार सेक्टर में नियंत्रण रेखा (एलओसी) पर दो आतंकवादियों को ढेर कर घुसपैठ की एक कोशिश को नाकाम कर दिया। अधिकारियों ने बताया कि सेना ने सीमा पार से घुसपैठ की कोशिश कर रहे आतंकवादियों के एक समूह पर गोलीबारी की। अधिकारियों ने कहा, इस ऑपरेशन में घुसपैठ कर रहे दो आतंकवादी मारे गये हैं। हालांकि ऑपरेशन अभी जारी है, और विस्तृत विवरण की प्रतीक्षा है। अधिकारियों के अनुसार, मारे गये आतंकवादियों के शव एलओसी पर बाड़ के उस पार पड़े हैं। कुपवाड़ा जिला बारामूला लोकसभा क्षेत्र के अंतर्गत आता है जहां इन दिनों चुनाव प्रचार अभियान जोरों पर है। सीट पर पांचवें चरण में 20 मई को मतदान होना है।

सुप्रीम कोर्ट का 17 विदेशी घुसपैठियों को भेजने का आदेश

नई दिल्ली । सुप्रीम कोर्ट ने 17 विदेशी नागरिकों को उनके देश वापस भेजने का आदेश दिया है। कोर्ट ने केंद्र सरकार से कहा कि तत्काल 17 विदेशी नागरिकों को वापस भेज जाए, जिन्हें असम के एक डिटेंशन कैंप में रखा गया है। केस की सुनवाई के दौरान जस्टिस एएस ओका ने टिप्पणी की कि जो संसाधन इन लोगों पर खर्च हो रहे हैं, वे भारत के लोगों को मिलने चाहिए। जस्टिस अभय एस. ओका और जस्टिस उज्जल भुइयां की बेंच ने कहा कि इन 17 लोगों के पास भारत में कोई केस दर्ज नहीं है। ऐसे में उन्हें वापस भेजने में कोई अड़चन नहीं है। अदालत ने कहा, रिपोर्ट से पता चलता है कि असम में डिटेंशन सेंटर है, जिसे ट्रांजिट कैंप भी कहा जाता है। डिटेंशन सेंटर में घोषित तौर पर 17 विदेशी मौजूद हैं, जिनमें से 4 तो दो साल से यहीं हैं। हमारा मानना है कि केंद्र सरकार को तत्काल इन्हें वापस भेजने के लिए कदम उठाने चाहिए। इन लोगों के खिलाफ किसी अपराध के तहत मुकदमा भी दर्ज नहीं है। सबसे पहले उन 4 लोगों को वापस भेजना चाहिए, जो 2 साल से डिटेंशन सेंटर में हैं।ह्ल अदालत ने कहा कि इस मामले में क्या ऐक्शन लिया गया, इसकी रिपोर्ट दो महीने के अंदर सौंपी जाए।

अब इस केस की अगली सुनवाई कोर्ट ने 26 जुलाई को करने का फैसला लिया है। यह फैसला असम के डिटेंशन सेंटर्स की स्थिति को लेकर दिया गया। असम के इन डिटेंशन सेंटर्स में उन लोगों को रखा जाता है, जिनकी नागरिकता पर संदेह हो या फिर उन्हें ट्राइब्यूनल की ओर से विदेशी घोषित किया गया हो। केस की सुनवाई के दौरान जस्टिस भुइयां ने यह भी पूछा कि आखिर विदेश से आए लोगों को वापस भेजने की क्या प्रक्रिया है। अदालत ने कहा, ह्यएक बार ट्राइब्यूनल अपना नतीजा दे देते हैं कि ये लोग विदेशी हैं तो फिर अगला कदम क्या होता है? क्या आपकी पड़ोसी देशों के साथ इसे लेकर कोई समझौता है? यदि उन्हें वापस भेजना है तो यह कैसे होगा? आप उन्हें हमेशा सेंटर में ही नहीं रख सकते।

सड़क किनारे खड़े ट्रक से टकराई कार, एक ही परिवार के छह लोगों की मौत

भुवनेश्वर , ओडिशा के क्योंझर जिले के चंपुआ में राष्ट्रीय राजमार्ग–520 पर एक अनियंत्रित कार की सड़क किनारे खड़े ट्रक से जोरदार टक्कर हो गई। इस दुर्घटना में एक ही परिवार के छह सदस्यों की मौत हो गई। अधिकारियों ने गुरुवार को यह जानकारी दी। हादसा बुधवार देर शाम हुआ। पुलिस ने कहा, अचानक ब्रेक लगाने के चलते कार का संतुलन बिगड़ गया और यह चंपुआ पुलिस सीमा के अंतर्गत रिमुली के पास एक खड़े ट्रक से जा टकराई। इस दौरान कार के पीछे चल रहे दूसरे तेज रफ्तार ट्रक ने पीछे से टक्कर मार दी। हादसे में तीन महिलाओं और छह साल की बच्ची समेत परिवार के सभी सदस्यों की मौके पर ही मौत हो गई। हादसा दोनों वाहनों के चालकों की तेज रफ्तार के कारण हुआ।

मृतकों की पहचान क्योंझर जिले के बरबिल इलाके की फुलंती पलाई, संजय महाकुड, लुसी पलाई, संध्या महाकुड़, पीहू महाकुड़ और प्रमोद पलाई के रूप में हुई है।

केजरीवाल की गिरफ्तारी पर एससी में लंबी बहस

नई दिल्ली । कथित शराब घोटाले में दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी सही थी या गलत, इसका फैसला सुप्रीम कोर्ट को करना है। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की ओर से ईडी ऐक्शन के खिलाफ दायर याचिका पर देश की सबसे बड़ी अदालत में गुरुवार को लंबी सुनवाई हुई। जस्टिस संजीव खन्ना और जस्टिस दीपांकर दत्ता की बेंच के सामने ईडी ने अपनी दलीलें पेश कीं। कोर्ट ने कहा कि शुक्रवार को इस मामले में आगे की बहस होगी। इससे पहले कोर्ट ने केजरीवाल को 21 दिन की अतंरिम राहत दी थी। केजरीवाल 1 जून तक जमानत पर हैं।

ईडी की ओर से एएसजी ने कहा कि यदि शरद रेड्डी पर दबाव डाला गया होता तो उन्होंने पूरी तरह अलग बयान दिया होता। यदि एजेंसी पक्षपाती है... यह किसी ऐसे व्यक्ति का बयान नहीं जिस पर दबाव हो। उन्होंने इतना ही कहा कि उनकी मुलाकात हुई। वह कह सकते थे कि केजरीवाल ने 100 करोड़ मांगे। एजेंसी निष्पक्ष है। पर्याप्त सबूत हैं। यह सबूत नहीं होने का केस नहीं। एजेंसी किसी राजनीतिक उद्देश्य से प्रेरित नहीं।

रिश्वत मांगी और घोटाले के पैसे से होटल में रहेः ईडी

ईडी ने कहा कि ना सिर्फ रिश्वत ली गई, बल्कि इस बात का सबूत भी है कि वह गोवा के 7 स्टार होटल में रहे जिसका लाखों में बिल था। इसका भुगतान चमन प्रीत सिंह ने किया जिसे कैश मिला था। जहां तक उनकी भूमिका का सवाल है उन्होंने 100 करोड़ की मांग की। इसमें से 45 करोड़ को चमन प्रीत सिंह ने हैंडल किया जिसने गोवा में होटल का बिल दिया।

केजरीवाल के खिलाफ सामग्री मौजूदः ईडी

एएसजी ने कहा कि केजरीवाल को लेकर जो सामग्री मौजूद है उससे जांच अधिकारी बिना किसी शक इस निष्कर्ष पर पहुंच सकते हैं कि याचिकाकर्ता ने अपराध किया है। उन्होंने कहा कि इस चरण में सबूतों की विश्वसनीयता पर विचार नहीं कर सकते। उन्होंने कहा कि सेक्शन 19 में सामग्री शब्द का इस्तेमाल किया गया है सबूत नहीं। उन्होंने कहा, 'सबसे महत्वपूर्ण सामग्री है कि उन्होंने रिश्वत में 100 करोड़ की मांग की। यदि सामग्री है तो, जिसकी वजह से 100 करोड़ रुपए दिए गए, यह अलग अलग स्थानों पर भेजा गया। यह गोवा पहुंचा और आम आदमी पार्टी के प्रचार में इस्तेमाल किया गया।'

आप को भी बनाने जा रहे आरोपीः एएसजी

एएसजी ने सुप्रीम कोर्ट के सामने कहा कि आम आदमी पार्टी के खिलाफ भी शिकायत दर्ज किया जाएगा। उन्होंने कहा कि इस पर काम चल रहा है। उन्होंने कहा कि सक्षम अदालत ने संज्ञान लिया है। प्राथमिक दृष्टया सेक्शन 4 पीएमएलए के तहत अपराध हुआ है।

एसजी ने एससी को बताया— केजरीवाल कहते हैं जीते तो जेल नहीं जाना पड़ेगा

एसजी तुषार महेता बेल पर केजरीवाल की ओर से दिए जा रहे भाषण का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा, 'वह कहते हैं कि यदि आपने झाड़ू (आप का चुनाव निशान) को चुना मैं जेल नहीं जाऊंगा।' इस पर केजरीवाल के वकील सिंघवी ने कहा, 'मुझे नहीं लगता उन्होंने ऐसा कहा।

20 मई को खुलेगें भगवान मद्महेश्वर के कपाट, प्रक्रिया शुरू

रुद्रप्रयाग : द्वितीय केदार भगवान मद्महेश्वर के कपाट खुलने की प्रक्रिया गुरुवार को शुरू हो गई है। गुरुवार को भगवान की विग्रह डोली गर्भगृह से सभामंडप में विराजमान हुई। जबकि यहां स्थानीय लोगों ने छावड़ी लगाकर भगवान को नए अनाज का भोग लगाया। 20 मई को भगवान मद्महेश्वर के कपाट देश-विदेश के भक्तों के दर्शनार्थ खोल दिए जाएंगे। गुरुवार को ओंकारेश्वर मंदिर ऊखीमठ में कपाट खुलने की प्रक्रिया को लेकर केदारनाथ धाम के रावल भीमाशंकर लिंग ने पूजा-अर्चना संपंन की। हवन यज्ञ के बाद उन्होंने भगवान मद्महेश्वर की विग्रह डोली को सभा मंडप में विराजमान किया। स्थानीय डगवाड़ी गांव के लोगों के साथ ही श्रद्धालुओं ने भगवान मद्महेश्वर को छावड़ी के रूप में नए अनाज का भोग लगाया। नए अनाज का भोग भगवान को अर्पित किया। साथ ही न्याय के देवता भगवान मद्महेश्वर की देवडोली पर फूलों की वर्षा की। शुक्रवार

को भी भगवान मद्महेश्वर की चल विग्रह उत्सव डोली शीतकालीन गद्दी स्थल ओंकारेश्वर मन्दिर ऊखीमठ के सभामंडप में ही दर्शनार्थ विराजमान रहेगी। जबकि 18 मई को डोली ऊखीमठ से प्रस्थान करेगी। पहले दिन डोली रांसी, 19 को डोली गौंडार और 20 को डोली मद्महेश्वर पहुंचेगी जहां 20 मई को शुभ मुहूर्त पूर्वाह्न 11.15 बजे मंदिर के कपाट श्रद्धालुओं के दर्शनार्थ खोल दिए जाएंगे। बदरी-केदार मंदिर समिति के अध्यक्ष अजेंद्र अजय के निर्देश पर मद्महेश्वर मंदिर के कपाट खुलने की तैयारियों पूरी कर दी गई है। मुख्य कार्याधिकारी योगेंद्र सिंह ने देवडोली यात्रा के लिए आदेश जारी किए हैं ताकि देव डोली यात्रा का संचालन समुचित ढ़ग से हो सके। अपने संदेश में बीकेटीसी उपाध्यक्ष किशोर पंवार ने सभी श्रद्धालुओ को शुकामनाएं दी है।

स्वाति मालीवाल मामला : राष्ट्रीय महिला आयोग ने केजरीवाल के पीएस को किया तलब

नई दिल्ली ,राज्यसभा सांसद स्वाति मालीवाल द्वारा लगाए गए आरोपों के संबंध में राष्ट्रीय महिला आयोग (एनसीडब्ल्यू) ने स्वतः संज्ञान लिया है। एनसीडब्ल्यू ने दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के निजी सचिव बिभव कुमार को शुक्रवार को पेश होने के लिए समन जारी किया है। राष्ट्रीय महिला आयोग ने मीडिया पोस्ट का स्वतः संज्ञान लिया था, जिसका शीर्षक था, स्वाति मालीवाल ने अरविंद केजरीवाल के निजी सचिव पर उनके साथ मारपीट करने का आरोप लगाया है। नोटिस में जिक्रहै कि अरविंद केजरीवाल के सचिव ने सीएम आवास पर उनके (स्वाति मालीवाल) साथ बेरहमी से मारपीट की। एनसीडब्ल्यू ने

नोटिस में आगे कहा कि आयोग ने 17 मई आज सुबह 11 बजे मामले में सुनवाई निर्धारित की है, जिसमें उनको व्यक्तिगत रूप से आयोग के सामने उपस्थित होना होगा। इसमें आगे कहा गया है, इस बात पर ध्यान रखें कि डिफॉल्ट होने पर आयोग ऐसी कार्रवाई करने के लिए आगे बढ़ सकता है जो वह उचित समझे।

लोनिवि में नौकरी का झांसा देकर ठग लिए 4.45 लाख

देहरादून। लोक निर्माण विभाग में नौकरी का झांसा देकर टिहरी निवासी युवक से साढ़े चार लाख रुपए ठग लिए गए। पीड़ति की एसएसपी कार्यालय में दी गई तहरीर पर बुधवार को नेहरू कॉलोनी थाना पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। एसओ नेहरू कॉलोनी मोहन सिंह ने बताया कि हरीश असवाल हाल निवासी सृष्टि विहार, दीपनगर मूल निवासी कठूड, टिहरी गढ़वाल ने तहरीर दी।

कहा कि वह देहरादून में रहकर पढाई कर रहा है। पिछले साल उसका संपर्क सुंदर सिंह निवासी बैहमू, चकराता से हुआ। आरोपी ने पीड़ति को झांसा दिया कि उसे लोनिवि ऑफिस में नौकरी लगवा देगा।

श्रद्धालुओं की सुरक्षित, स्वस्थ और सुगम यात्रा सरकार की प्राथमिकता : धामी

जयन्त प्रतिनिधि।

चमोली : मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने गुरूवार को सचिवालय में चारधाम यात्रा व्यवस्थाओं की समीक्षा करते हुए अधिकारियों को निर्देश दिये कि सुरक्षित और सुगम चारधाम यात्रा के लिए शासन और पुलिस के वरिष्ठ अधिकारी सड़क मार्ग से ग्राउंड जीरो पर यात्रा व्यवस्थाओं को देंखें। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी पहली प्राथमिकता चारधाम यात्रा पर आने वाले सभी श्रद्धालुओं की सुरक्षा है। उन्होंने सभी श्रद्धालुओं से अनुरोध किया है कि उनको चारधाम यात्रा के लिए रजिस्ट्रेशन के अनुसार जो तिथि मिली है, उसके अनुसार ही दर्शन के लिए आयें। उन्होंने सभी श्रद्धालुओं से स्वास्थ्य परीक्षण और मौसम का पूर्वानुमान देखने

के बाद ही चारधाम यात्रा पर आने के लिए अनुरोध किया। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है कि चारधाम यात्रा भी सुरक्षित हो और सभी श्रद्धालु भी स्वस्थ और सुरक्षित हों। मुख्यमंत्री ने निर्देश दिये कि चारों धामों में 31 मई तक वीआईपी दर्शन की व्यवस्था स्थगित रखी जाय। मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिये कि चारधाम यात्रा पर आने वाले श्रद्धालुओं के लिए चारों धामों में प्रतिदिन के लिए जो क्षमता निर्धारित की गई है, उसके अनुसार ही दर्शन के लिए भेजे जाएं। रजिस्ट्रेशन की व्यवस्थाओं को और मजबूत बनाया जाए। श्रद्धालुओं का चार धाम यात्रा हेतु रजिस्ट्रेशन होने पर ही चेक प्वाइंट से आगे जाने दें। परिवहन विभाग, राजस्व विभाग, पुलिस विभाग को संयुक्त रूप से चेक पोस्ट पर चेकिंग करने के निर्देश दिए। आगामी तीन दिनों तक ऑफलाइन रजिस्ट्रेशन रोक दिए जाय। यह सुनिश्चित हो कि चार धाम यात्रा नियमों के अनुरूप ही चले। मुख्यमंत्री ने निर्देश दिये कि चार धाम के सभी मार्गों के एंट्री प्वाइंट एवं विकास नगर, यमुना पुल क्षेत्र, धनौल्टी, सुवाखोली में भी सख्ती से चेकिंग की व्यवस्था सुनिश्चित हो। इन स्थलों पर यात्रियों की सुविधा का भी पूरा ध्यान रखा जाए।

संपादकीय

चारधाम व्यवस्थाओं पर हंगामा

चार धाम यात्रा की शुरुआत के साथ बिगड़ी व्यवस्थाएं विपक्ष के निशाने पर है जिसे लेकर अब राजनीति भी गरमाने लगी है। इधर कांग्रेस ने चार धाम यात्रा के आयोजन को कटघरे में खड़ा करते हुए व्यापक व्यवस्थाएं न करने का आरोप लगाया तो वही भाजपा ने भी कांग्रेस को आड़े हाथों लेते हुए सरकार की उपलब्धियां से निराश होने की बात कही। इधर सोशल मीडिया पर चार धाम यात्रा से जुड़े पोस्ट भी सरकार की एक मुसीबत बनते जा रहे हैं जिसे देखते हुए अनर्गल प्रचार व चार धाम यात्रा के खिलाफ भ्रामक समाचार छापने वालों पर भी कार्रवाई के निर्देश दिए गए हैं, जिसके तहत उत्तर प्रदेश के एक दैनिक अखबार के संवाददाता पर मुकदमा दर्ज किया गया है। यात्रा की शुरुआत के साथ ही इस प्रकार के विवाद चिंताजनक है क्योंकि अभी यात्रा का एक बड़ा चरण पूरा होना है और यदि शुरुआत में ही इस प्रकार के हालात और आरोप प्रत्यारोप सामने आने लगे तो कहीं ना कहीं यात्रा को लेकर श्रद्धालुओं में असमंजस की भावना भी उत्पन्न होगी। उत्तराखंड में आई प्राकृतिक आपदा के बाद सरकार ने कुशल प्रबंधन की नीति को आधार बनाते हुए यात्रियों को हर संभव सुविधा देने का प्रयास किया है हालांकि यात्रियों की रिकॉर्ड तोड़ संख्या कहीं ना कहीं व्यवस्थाओं पर भारी पड़ती नजर आई है। इसके मायने यह नही है कि यात्रा असुविधाजनक है और व्यवस्थाएं संभालने में प्रशासन को दिक्कतें आ रही है। किसी भी धार्मिक आयोजन में श्रद्धालुओं की संख्या बढ़ने से ऐसे हालात पैदा हो ही जाते हैं और इन परिस्थितियों में पक्ष हो या विपक्ष सभी को अपने प्रदेश की गरिमा और धार्मिक स्थलों की मर्यादा को बनाए रखने की नीति पर चलना चाहिए। सरकार का उद्देश्य यात्रियों को हर संभव सुविधा प्रदान करने के साथ-साथ सुरक्षा प्रदान करना भी है, और यही कारण है कि सरकार ने दर्शनों के लिए पंजीकरण व्यवस्था शुरू की है ताकि हर यात्री का पूर्ण बब्यौरा रखा जा सके ताकि किसी भी आपात स्थिति में तत्काल सहायता उपलब्ध हो सके। चार धाम यात्रा को महज यात्रियों की संख्या मात्र से नही जोड़ा जा सकता बल्कि यह धार्मिक आयोजन राज्य मे पर्यटन और रोजगार की दिशा में भी काफी सहायक सिद्ध होगा। निश्चित तौर पर पिछले कुछ वर्षों में, खास तौर से आपदा के बाद उत्तराखंड के न केवल चार धाम बल्कि अन्य धार्मिक स्थलों पर भी सुविधाओं में बढ़ोतरी की गई है। श्रद्धालुओं की बढ़ती संख्या के साथ सरकार ने बेहतर सड़के, सुरक्षा, मेडिकल जैसी सुविधाओं को प्राथमिकता पर रखा है। वर्तमान सीजन में भी कुछ यात्रियों को स्वास्थ्य खराब होने पर एयर एम्बुलेंस से स्वास्थ्य केंद्रों तक पहुंचाया गया है। हालांकि राज्य सरकार को इस सत्य से भी पीछे नहीं हटना चाहिए की यात्रा की शुरुआत में ही जो व्यवस्थाएं देखने को मिली है उन पर तत्काल कार्रवाई करते हुए आगे की यात्रा में इसकी पुनरावृत्ति रोकी जाए। स्पष्ट है कि यह कार्य केवल यात्रियों की संख्या में नियंत्रित करते हुए उन्हें चरणबद्ध तरीके से दर्शन करने की व्यवस्था से ही कुशलतापूर्वक संपन्न हो सकता है। भविष्य की चार धाम यात्रा को लेकर सरकार को भी कहीं ना कहीं चिंतन करने की जरूरत है सवाल राजनीति का नहीं है बल्कि श्रद्धालुओं की आस्था और सुरक्षा से जुड़ा हुआ है, जिससे किसी भी स्तर पर समझौता नहीं किया जा सकता।

स्वदेश कमाई भेजने में सबसे आगे भारतीय

साल 2022 में भारत को विप्रेषण से 111 अरब डॉलर से अधिक प्राप्त हुए। यह राशि भारत के वस्तु व्यापार घाटे का लगभग आधा है। यह मेक्सिको और चीन को विप्रेषण से मिलने वाले धन के दुगुने से भी अधिक है। भारत को मिलने वाली यह कमाई 2010 की तुलना में दुगुने से भी अधिक हो गयी है और इसकी औसत सालाना वृद्धि दर छह प्रतिशत से अधिक है, जो सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) से ज्यादा है। चीन की इस कमाई में कमी आ रही है तथा पाकिस्तान एवं बांग्लादेश को आने वाली रकम भारत की एक-चौथाई है। भारत के विप्रेषण का बड़ा हिस्सा खाड़ी देशों से आता है, जहां बड़ी संख्या में भारतीय निर्माण, खुदरा, सुरक्षा, यातायात और अर्द्ध-कौशल के कामों में लगे हैं। ये लोग अपनी कमाई का अच्छा-खासा हिस्सा देश वापस भेजते हैं, जिससे उनके परिवार को मदद मिलती है। उन्हें छह प्रतिशत तक लेन-देन शुल्क देना पड़ता है तथा उन पर मुद्रा विनिमय दर का जोखिम भी रहता है। भारत से बाहर जाने वाले विप्रेषण से आता था, जो अब 20 प्रतिशत से कम हो गया है। इससे केरल प्रति व्यक्ति उपभोग के मामले में धनी राज्यों की श्रेणी में आ गया, पर वहां श्रमिकों की कमी की समस्या बहुत गंभीर हो गयी, जिसकी भरपाई के लिए बिहार, झारखंड और ओडिशा जैसे राज्यों से श्रमिकों को लाना पड़ रहा है। बाहर से आ रहे धन ने केरल में परिसंपत्तियों के दाम में भी बड़ी वृद्धि कर दी है। इस प्रकार, राज्य या देश के स्तर पर विप्रेषण का मिश्रित प्रभाव होता है। अगर यह धन उत्पादक निवेश, मैन्युफैक्चरिंग और उच्च तकनीक के उद्योगों में जाने के बजाय केवल रियल एस्टेट में जायेगा, तो आगे चल कर इसके गंभीर परिणाम हो सकते हैं। इसका एक लैंगिक पहलू भी है। दो-तिहाई से अधिक भारतीय आर्थिक प्रवासी पुरुष हैं। तो, महिलाएं सामाजिक व्यवस्था के अनुसार बच्चों एवं बुजुर्गों की देखभाल के लिए यहीं रह जाती हैं। यह स्थिति श्रीलंका और फिलीपींस के प्रवासियों के साथ नहीं है।

भारत सबसे अधिक आबादी वाला देश है, जहां उच्च स्तरीय रोजगार की कमी है और प्रति व्यक्ति आय भी कम है। ऐसे में आर्थिक प्रवासन में इसका अग्रणी होना स्वाभाविक स्थिति है। घरेलू स्तर पर भी देश की आबादी का एक-तिहाई हिस्सा आंतरिक प्रवासी है, जो रोजगार और जीवनयापन की तलाश में एक जगह से दूसरी जगह पलायन करता है। अधिकांश आंतरिक प्रवासन मौसमी और चक्रीय होता है तथा अक्सर ऐसा राज्य के भीतर होता है। भारतीयों का अंतरराष्ट्रीय पलायन बिल्कुल अलग मामला है। वहां जोखिम, शोषण, भेदभाव आदि के खतरे होते हैं, विशेषकर तब जब अधिकतर प्रवासी कामगार हैं। इस संबंध में हमारे दूतावास और उच्चायोगों के सक्रिय हस्तक्षेप की आवश्यकता है। भारत विश्व व्यापार संगठन के तहत एक विशेष कार्य परमिट व्यवस्था बनाने की पैरोकारी करता रहा है, ताकि लोग काम के लिए सुगमता से यात्रा कर सकें और वीजा लेते समय उन्हें परेशानी न हो। तीव्र प्रवासी-विरोधी भावना के इस दौर में आर्थिक प्रवासियों और सेवा प्रदाताओं की सुगम आवाजाही की व्यवस्था करने में समय लगेगा। फिलहाल हम विप्रेषण की खासी कमाई से खुश हो सकते हैं।

अजीत रानाडे

संयुक्त राष्ट्र की संस्था अंतरराष्ट्रीय प्रवासन संगठन की विश्व प्रवासन रिपोर्ट 2024 में कई ऐसे तथ्य एवं आंकड़े हैं, जो शोधार्थियों, नीति-निर्धारक एवं मीडिया के लिए उपयोगी हैं। ऐसे दौर में, जब दुनियाभर में प्रवासन विरोधी भावनाएं बढ़ती जा रही हैं, विमर्श में इन सूचनाओं का महत्व बहुत बढ़ जाता है। क्या प्रवासन एक मानवाधिकार है? भारतीय संविधान हर नागरिक को अपने देश के किसी भी हिस्से में आवाजाही का अधिकार देता है।

लेकिन सीमा पार आना-जाना एक नितांत अलग स्थिति है। हालांकि संयुक्त राष्ट्र स्पष्ट रूप से प्रवासन के अधिकार को मानवाधिकार के रूप में चिह्नित नहीं करता है, लेकिन अपने देश समेत किसी देश को छोड़ने के अधिकार को एक मौलिक अधिकार मानता है। यह विरोधाभासी प्रतीत होता है, पर ऐसा है नहीं। आपको यह अधिकार है कि आपका दमन व उत्पीड़न न हो, इसलिए आप दूसरे देश जा सकते हैं। लेकिन यह जरूरी नहीं है कि आपको स्वतः किसी देश में प्रवेश का अधिकार मिल जाता है।

इसी तरह से संयुक्त राष्ट्र शरण मांगने के और जबरदस्ती अपने देश न भेजने के अधिकार को भी मान्यता देता है। यह व्यवस्था दमन व उत्पीड़न के जोखिम को देखते हुए की गयी है। संयुक्त राष्ट्र का आकलन है कि 2022 में अंतरराष्ट्रीय प्रवासियों की संख्या 28। 10 करोड़ थी, जो वैश्विक आबादी का 3। 6 प्रतिशत है। इनमें संघर्ष, उत्पीड़न, हिंसा, राजनीतिक अस्थिरता आदि के कारण पलायन करने वाले लोगों के साथ-साथ आर्थिक अवसरों की तलाश के लिए दूसरे देशों में जाने वाले प्रवासी भी शामिल हैं।

आर्थिक कारणों से प्रवासन निश्चित रूप से मानवाधिकार नहीं है। पर एक बार कोई आर्थिक प्रवासी अन्य देश चला जाता है, तो उसके शोषण को रोकने और कुछ बुनियादी अधिकारों की रक्षा के लिए अंतरराष्ट्रीय समझौते एवं कानून हैं। भारत के आर्थिक प्रवासियों का शानदार रिकॉर्ड रहा है। वे लगभग तीन दशकों से अपनी मेहनत की कमाई देश वापस भेज रहे हैं, जिसके कारण विप्रेषण (रेमिटेंस) के मामले में भारत दूसरे देशों से बहुत आगे है। साल 2022 में भारत को विप्रेषण से 111 अरब डॉलर से अधिक प्राप्त हुए। यह राशि भारत के वस्तु व्यापार घाटे का लगभग आधा है। यह मेक्सिको और चीन को विप्रेषण से मिलने वाले धन के दुगुने से भी अधिक है। भारत को मिलने वाली यह कमाई 2010 की तुलना में दुगुने से भी अधिक हो गयी है और इसकी औसत सालाना वृद्धि दर छह प्रतिशत से अधिक है, जो सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) से ज्यादा है। चीन की इस कमाई में कमी आ रही है तथा पाकिस्तान एवं बांग्लादेश को आने वाली रकम भारत की एक-चौथाई है। भारत के विप्रेषण का बड़ा हिस्सा खाड़ी देशों से आता है, जहां बड़ी संख्या में भारतीय निर्माण, खुदरा, सुरक्षा, यातायात और अर्द्ध-कौशल के कामों में लगे हैं। ये लोग अपनी कमाई का अच्छा-खासा हिस्सा देश वापस भेजते हैं, जिससे उनके परिवार को मदद मिलती है। उन्हें छह प्रतिशत तक लेन-देन शुल्क देना पड़ता है तथा उन पर मुद्रा विनिमय दर का जोखिम भी रहता है।भारत से बाहर जाने वाले विप्रेषण में भी वृद्धि हो रही है। भारतीय रिजर्व बैंक के हालिया आंकड़ों के अनुसार, यह रकम 2023-24 में 32 अरब डॉलर से अधिक हो सकती है, जो पिछले साल से 25 प्रतिशत अधिक है। भारत आने वाली राशि कामगारों द्वारा भेजी जाती है, पर भारत से बाहर जाने वाले धन के प्रेषक अमूमन धनी लोग हैं, जो अपने बच्चों की पढ़ाई, परिजनों के रहन-सहन के खर्च या संपत्ति खरीदने के लिए पैसे भेजते हैं। इस तरह दो तरह के प्रेषकों के स्वरूप में बड़ा अंतर है। बहुमूल्य विदेशी मुद्रा बचाने के नाम पर भारत से बाहर जा रहे धन पर रोक लगाना सही नहीं होगा, बल्कि हमें इसकी बुनियादी वजहों की पड़ताल करनी चाहिए। भारत आने वाले धन के भी चिंताजनक पहलू हैं। एक ओर इससे भारत में धन भेजने वालों की निष्ठा और कर्मठता इंगित होती है। इससे व्यापार घाटे और विदेशी मुद्रा विनिमय में उतार-चढ़ाव का सामना करने में मदद मिलती है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि भारत अपने श्रम अधिशेष का निर्यात कर रहा है। इसमें चिंता की बात यह है कि यह श्रम तुलनात्मक रूप से कम उत्पादक है।

क्या उन कामगारों को भारत में रोजगार नहीं मिल सकता था? क्या इससे निर्भरता वृद्धि हो रही है? कभी केरल की कुल आय का 25 प्रतिशत हिस्सा रहे हैं। आज भी अच्छी तादाद में दूसरे देशों के लोग भारत में हैं। इस तरह के बयानों को भारतीय मीडिया भी प्रमुखता से छापता-दिखाता है। यह जरूरी हो गया है कि हमारे देश में मीडिया अपनी भूमिका और महत्व को ठीक से समझने की कोशिश करे। भारत न केवल आर्थिक मोर्चे पर अच्छा प्रदर्शन कर रहा है, बल्कि वह स्वायत्त एवं स्वतंत्र विदेश नीति पर भी चल रहा है, जिसके केंद्र में राष्ट्रीय हित हैं। जो पहले के समृद्ध एवं शक्तिशाली देश हैं, उन्हें यह स्थिति हजम नहीं हो रही है। वे समझते हैं कि भारत एक लोकतांत्रिक देश है। जहां डिजिटल और नैरेटिव दुष्प्रचार के माध्यम से सत्ता परिवर्तन किया जा सकता है या विकास प्रक्रिया को अवरुद्ध किया जा सकता है। इसी सोच के अनुसार वे यह सब कर रहे हैं। ऐसे प्रयास चुनाव के दौर पर अधिक सक्रियता से किये जा रहे हैं। ऐसी स्थिति में हमें एक संचार रणनीति बनानी चाहिए, ताकि इस तरह के प्रयासों के प्रभावों को रोका जा सके।

अब रूस ने भी कह दिया है कि अमेरिका भारत के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप कर लोकसभा चुनाव को प्रभावित करना चाहता है।

स्वार्थ से प्रेरित है भारत विरोधी प्रचार

अनिल त्रिगुणायत

पश्चिमी सरकारों, संस्थानों और मीडिया द्वारा भारत विरोधी नैरेटिव बनाने की कोशिश के बारे में विदेश मंत्री एस जयशंकर का जो बयान आया है, वह पूरी तरह सही है। भारत के विकास तथा उसके वैश्विक प्रभाव को बाधित करने की मंशा से कुछ देश हमारे विरुद्ध तरह-तरह का दुष्प्रचार कर रहे हैं। ऐसा केवल सरकारों की ओर से नहीं किया जा रहा है, बल्कि इसमें मीडिया और संगठनों की भूमिका भी है। उदाहरण के तौर पर, जॉर्ज सोरोस और उनके फाउंडेशन की ओर से खुले रूप से देश में सरकार बदलने की बातें कही गयी हैं। इस तरह के अनावश्यक हस्तक्षेप और दबाव बनाने की कोशिशें पहले भी होती रही हैं, पर देश में चुनावी सरगर्मी शुरू होने के साथ इसमें तेजी आयी है। पश्चिमी सरकारों और मीडिया ने निज्जर और पन्नू के मामलों में भारतीय एजेंसियों के शामिल होने की निराधार बातें की, मानवाधिकार को लेकर सवाल उठाने के प्रयास हुए, आंतरिक राजनीति, प्रशासन और कानून व्यवस्था के बारे में टिप्पणियां की गयीं। भारत सरकार की ओर से कड़ा एतराज दर्ज कराया गया है। हमें यह समझने की आवश्यकता है कि यह सब एक सोची-समझी रणनीति के तहत किया जा रहा है। एक प्रकार से यह उनका विशेष टूल-किट है, जिसे वे अपनी मीडिया के जरिये बढ़ाना चाहते हैं।

इसी क्रम में पश्चिम के कई देशों ने अपनी संस्थाएं स्थापित की हुई हैं, जिन्हें वे शोध संस्थान और नागरिक समाज की श्रेणी में रखते हैं। ये समूह तथ्यों को तोड़-मरोड़कर तथा पूर्वाग्रह से ग्रस्त अपने विश्लेषण को बिल्कुल पेशेवर अंदाज में प्रस्तुत करते हैं। उदाहरण के लिए, हमने कई बार देखा है कि लोकतंत्र सूचकांक में पाकिस्तान जैसे देशों को भारत से ऊपर दिखा दिया जाता है, मीडिया की स्वतंत्रता के सूचकांक में भारत की तुलना में अफगानिस्तान को बेहतर बता दिया जाता है। इससे स्पष्ट है कि ऐसे सूचकांकों या रिपोर्टों की विश्वसनीयता नहीं है। उनका एजेंडा एक खास तरह का नैरेटिव बनाना है, सो वे उसी दिशा में काम करते रहते हैं।

ऐसा वे इसलिए कर पाते हैं कि उनके पास एक मजबूत मीडिया है। अनेक देशों, जिनमें भारत भी शामिल है, का मीडिया कई मामलों में पश्चिम की अंग्रेजी मीडिया पर निर्भर और उससे प्रभावित रहता है। जानकारी के अभाव में या उनके प्रभाव में भारत में भी मीडिया कई बार पश्चिम मीडिया की बातों को दोहराता रहता है। इसका लोगों पर असर होता है, जो खतरनाक है क्योंकि वे ऐसी खबरों पर भरोसा कर लेते हैं। आजकल सोशल मीडिया का प्रभाव बहुत बढ़ गया है। विभिन्न सोशल मीडिया मंचों पर लोग बिना सोचे-विचारे खबरों को साझा कर आगे बढ़ाते रहते हैं। जब तक कोई प्रतिक्रिया आये या उसका खंडन हो, बात बहुत दूर तक फैल चुकी होती है। जबकि होना यह चाहिए कि लोग साझा करने से पहले खबरों की पड़ताल करें और उसके निहितार्थों को समझें।

ऐसी स्थिति में हमें ठोस तैयारी की आवश्यकता है। भारत के विरुद्ध पश्चिम या कुछ अन्य देशों की सरकारों और मीडिया द्वारा जो नैरेटिव रचने का उपक्रम चल रहा है, उसे 'ग्रे-जोन वॉरफेयर' कहा जाता है। अभी हाल में अमेरिकी राष्ट्रपति ने कह दिया कि जिन देशों में अप्रवासी नहीं आते, वहां आर्थिक विकास नहीं होता। यह कहते हुए उन्होंने भारत को चीन, जापान और रूस के साथ रख दिया। जबकि सच यह है कि हजारों वर्षों से लोग भारत आते रहे हैं और यहां बसते

हर समस्या का हल सैनिक अभियान नहीं

इस्त्राइल ने दक्षिणी गाजा के शहर राफा में सैनिक अभियान शुरू कर दिया है। सेना ने सोमवार रात को राफा में हवाई हमले किए जिनमें 23 फिलिस्तीनियों की मौत हो गई इस सैन्य कार्रवाई के बाद इस्त्राइल और फिलिस्तीन के बीच संभावित युद्ध-विराम के रास्ते बंद हो गए हैं। हैरानी की बात है कि इस्त्राइल के पैरोकार अमेरिका की अनिच्छा और अंतरराष्ट्रीय बिरादरी के विरोध के बावजूद इस्त्राइल गाजा को पूरी तरह तबाह करने पर आमादा है। विचारणीय प्रश्न यह है कि आखिर. इस्त्राइल और उसके प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू को शांति की राह छोड़कर युद्ध के पथ पर चलने की ताकत और प्रेरणा कहां से मिल रही है।

करीब आठ महीने से चल रहे इस युद्ध के बारे में कहा जा सकता है कि इस्त्राइल अब आत्मरक्षा के लिए नहीं, बल्कि घरेलू राजनीति में बढ़त बनाने के लिए यह युद्ध लड़ रहा है। हमास युद्ध विराम के लिए तैयार है, लेकिन इस्त्राइल ने यह कहते हुए इस प्रस्ताव को नामंजूर कर दिया कि इससे उसकी मुख्य मांगें पूरी नहीं होतीं। गाजा पट्टी के शहर राफा में करीब 14 लाख फिलिस्तीनी शरण लिए हुए हैं जो इस्त्राइल के ताजा सैन्य अभियान से डरे और सहमे हुए हैं। इनका जीवन संकटग्रस्त है।

संयुक्त राष्ट्र के महासचिव एंटोनियो गुटेरस ने चेतावनी दी है कि राफा में जमीनी कार्रवाई बर्दाश्त नहीं की जाएगी लेकिन इस्त्राइली प्रधानमंत्री नेतन्याहू और उनके मंत्रिमंडल के सहयोगियों ने अपने कान बंद कर रखे हैं। इस्त्राइल के सैनिक अभियान से जाहिर होता है कि वह इसके जरिए अपने बंधकों को रिहा कराना और हमास के नेटवर्क को पूरी तरह ध्वस्त करना चाहता है। हालांकि सैन्य कार्रवाई के जरिए बंधकों की रिहाई आसान नहीं है।

हकीकत यह है कि इससे बंधकों की जान को खतरा पहुंच सकता है। वास्तव में युद्ध-विराम और शांति समझौते के रास्तों पर आगे बढ़कर ही बंधकों की सुरक्षित रिहाई संभव है। यह ऐतिहासिक तथ्य है कि हर समस्या का हल सैनिक अभियान नहीं हो सकता। आक्रमक सैनिक अभियान से गाजा के मासूम नागरिक ही मारे जाएंगे। अब तक करीब 35 हजार नागरिक मारे गए हैं। इस्त्राइल को अपने गॉड फादर अमेरिका से सबक लेना चाहिए कि उसे आखिरकार, अफगानिस्तान से अपने सैनिकों की वापसी क्यों करनी पड़ी। वियतनाम के साथ लड़ाई में उसे क्या हासिल हुआ। बंदूक की गोली से नहीं शांति वार्ता की मेज से ही समस्या का हल निकलेगा। यह सार्वभौमिक सत्य है, जिसे समझा जाना चाहिए।

मिस्टर एंड मिसेज माही का ट्रेलर रिलीज, खूब जमी जाह्नवी कपूर और राजकुमार राव की जोड़ी

मई के महीने में आने वाली फिल्मों में मिस्टर एंड मिसेज माही भी शामिल है। लंबे समय से यह फिल्म चर्चा में बनी हुई है।इस स्पोर्ट्स ड्रामा फिल्म से कलाकारों की पहली झलक सामने आने के बाद इसकी रिलीज को लेकर उत्सकुता और बढ़ गई।फिल्म में जाह्नवी कपूर और राजकुमार राव की जोड़ी नजर आने वाली है और अब इस बहुप्रतीक्षित फिल्म का ट्रेलर भी रिलीज हो गया है। राजकुमार के किरदार का नाम महेंद्र तो जाह्नवी, माही की भूमिका में हैं। स्पोर्ट्स बैकग्राउंड के साथ ट्रेलर में पारिवारिक ड्रामा भी देखने को मिल रहा है।राजकुमार के साथ जाह्नवी की केमिस्ट्री भी देखने में बढ़िया लग रही है।मिस्टर एंड मिसेज माही की कहानी महेंद्र सिंह धोनी के जीवन पर आधारित है। इससे पहले धोनी पर एम.एस धोनी-

द अन्टोल्ड स्टोरी नाम की फिल्म बनी थी, जिसमें दिवंगत एक्टर सुशांत सिंह राजपूत नजर आए थे। मिस्टर एंड मिसेज माही का निर्देशन शरण शर्मा ने किया है। करण जौहर फिल्म के निर्माता हैं। गुंजन सक्सेना के बाद यह शरण और जाह्नवी के बीच दूसरा सहयोग है, जबकि राजकुमार और शरण पहली बार साथ आए हैं।इस फिल्म की कहानी मिस्टर और मिसेज माही के इर्द-गिर्द घूमती है, जिनके लिए जिंदगी क्रिकेट और क्रिकेट जिंदगी है। क्रिकेट से बढ़कर मिस्टर माही सिर्फ अपनी प्यारी बीवी से प्यार करते हैं।फिल्म 31 मई को सिनेमाघरों में आएगी। बता दें कि राजकुमार और जाह्नवी की यह साथ में दूसरी फिल्म है। इससे पहले दोनों को निर्माता दिनेश विजान की फिल्म रूही में देखा गया था।हालांकि, यह हॉरर कॉमेडी फिल्म दर्शकों के बीच अपना जादू चलाने में नाकाम रही थी। जाह्नवी दूसरी बार राजकुमार के साथ काम कर बेहद खुश हैं। वह कई बार उनके प्रति अपनी दीवानगी जाहिर कर चुकी हैं।

जाह्नवी शुरुआत से ही राजकुमार के काम की प्रशंसक रही हैं। देवरा जाह्नवी की पहली दक्षिण भारतीय फिल्म है। इसके अलावा वह फिल्म उलझ में नजर आएंगी।

दिव्यांग फैंस उठा पाएंगे क्रिकेट के लाइव एक्शन का पूरा मजा

नई दिल्ली। स्पेशल दिव्यांग क्रिकेट फैंस के लिए खुशखबरी है। जून में अमेरिका और वेस्टइंडीज में होने वाले टी20 वर्ल्ड कप के दौरान भारतीय सांकेतिक भाषा (करछ) और ऑडियो वर्णनात्मक में कमेंट्री की जाएगी। गुरुवार को आधिकारिक प्रसारक डिज्नी हॉटस्टर और स्टार स्पोर्ट्स नेटवर्क ने विशेष प्रसारण की व्यवस्था का एलान किया।

यह स्पेशल प्रसारण भारत के सभी मैचों, सेमीफाइलन और फाइनल सहित 10 मैच के लिए किया जाएगा। ब्राडकास्टर ने कहा कि यह पहली बार है कि टी20 वर्ल्ड कप का प्रसारण सांकेतिक भाषा और वर्णनात्मक कमेंटरी के साथ प्रसारण किया जाएगा। इसकी मदद से क्रिकेट बाधिर, कम सुनने वाले और न देख सकने वाले फैंस तक अपनी पहुंच बना सकेगा।

न्यूयार्क में बांग्लादेश के खिलाफ अभ्यास मैच खेलेगी भारतीय टीम

नई दिल्ली, अगले महीने टी-20 वर्ल्ड कप में पांच जून को आयरलैंड के खिलाफ अपना अभियान शुरू करने से पहले भारतीय टीम न्यूयार्क में बांग्लादेश के खिलाफ अभ्यास मैच खेलेगी। ये एकमात्र अभ्यास मैच एक जून को खेला जाएगा। न्यूयार्क में भारतीय टीम को ग्रुप चरण के चार में से तीन मैच खेलने हैं, जिसमें नौ जून को पाकिस्तान के खिलाफ महामुकाबला भी शामिल है।

आईपीएल का ग्रुप चरण समाप्त होने के साथ ही रोहित शर्मा, हार्दिक पांड्या, बुमराह, सूर्यकुमार यादव, अर्शदीप समेत कई खिलाड़ी 21 मई को अमेरिका के लिए रवाना होंगे। बाकी खिलाड़ी 26 मई को आईपीएल फाइनल के बाद टीम से जुड़ेंगे। इनमें वह खिलाड़ी होंगे, जिनकी टीमें प्लेऑफ खेलेंगी।

एकमात्र अभ्यास मैच खेलेगी

भारतीय टीम

एक रिपोर्ट के अनुसार, न्यूयार्क के नसाऊ काउंटी स्टेडियम का बुधवार को अनावरण किया गया। 34 हजार दर्शकों की क्षमता वाले इस स्टेडियम में आठ मैचों खेले जाएंगे, जिनमें से तीन मैच भारत के हैं। इस स्टेडियम की परिस्थितियों से परिचित होने के लिए भारतीय टीम एक अभ्यास मैच खेलेगी।

फ्लोरिडा में तैयार की गई हैं ड्रॉप

यहां पहला मैच दक्षिण अफ्रीका और श्रीलंका के बीच होगा। नसाऊ स्टेडियम में फ्लोरिडा में तैयार की गई ड्राप इन पिच लगाई गई है। नसाऊस्टेडियम के अलावा अमेरिका में टेक्सास और ब्रोवार्ड काउंटी में मैचों का आयोजन किया जाएगा।

बॉर्डर 2 बनेगी भारतीय सिनेमा की सबसे बड़ी वॉर ड्रामा फिल्म, रिलीज तारीख भी आई सामने

जब से फिल्म बॉर्डर के सीक्वल बॉर्डर 2 बनने का ऐलान हुआ है, प्रशंसकों का उत्साह चरम पर है। वे फिल्म के हर छोटे-बड़े अपडेट पर नजर बनाए हुए हैं।खबरें थीं कि इस फिल्म के लिए सनी देओल और आयुष्मान खुराना साथ आ रहे हैं और नई जानकारी के मुताबिक, फिल्म में दोनों की एंट्री पक्की हो गई है। इसी के साथ रिलीज से जुड़ी जानकारी भी सामने आई है।आइए जानते हैं पर्दे पर कब आएगी बॉर्डर 2।

रिपोर्ट के मुताबिक, निर्माता भूषण कुमार और जेपी दत्ता ने बॉर्डर 2 को गणतंत्र दिवस, 2026 में रिलीज करने की योजना बनाई है। वे 23 जनवरी, 2026 को इसे दर्शकों के बीच लाने की तैयारी में हैं। 26 जनवरी, 2026 को गणतंत्र दिवस की छुट्टी होगी। लिहाजा फिल्म देखने ज्यादा से ज्यादा दर्शक पहुंचेंगे।निर्माताओं को लगता है कि भारतीय सैनिकों की बहादुरी का जश्न मनाने वाली इस फिल्म की रिलीज के लिए इससे बेहतर समय कोई नहीं हो सकता।

रिपोर्ट में कहा गया है कि आयुष्मान ने फिल्म साइन कर ली है। सनी जहां इसमें दोबारा मेजर कुलदीप सिंह चौधरी की दमदार भूमिका अदा करेंगे, वहीं आयुष्मान भी एक शानदार भूमिका के साथ दर्शकों के बीच दस्तक देने वाले हैं। उनकी भूमिका सनी से कमतर नहीं होगी।अनुराग सिंह इस फिल्म के निर्देशन की कमान संभाल रहे हैं।निर्माता-निर्देशक बॉर्डर 2 के रूप में भारतीय सिनेमा की अब तक की सबसे बड़ी वॉर ड्रामा फिल्म बनाने वाले हैं।

बॉर्डर 1997 में रिलीज हुई थी, जिसका निर्देशन जेपी दत्ता ने किया था। खास बात यह है कि बॉर्डर को 2026 में 29 साल पूरे हो रहे हैं। यह फिल्म 1971 के भारत-पाक युद्ध पर आधारित थी।

चाहेंगे तुम्हें इतना की स्वाति शर्मा ने अपनी मां से मिली सीख को किया साझा

चाहेंगे तुम्हें इतना में आशी की भूमिका के लिए मशहूर एक्ट्रेस स्वाति शर्मा ने अपनी मां से मिली कुछ सीख साझा की, जिससे उनके एक्टिंग करियर में काफी मदद मिली।स्वाति ने कहा, काम के प्रति मेरा जुनून मेरी मां से आता है, जिन्होंने मुझे वह करना सिखाया जो मुझे सचमुच पसंद है। अपने जुनून के प्रति उनका समर्पण मुझे अपने काम के प्रति समर्पित होने के लिए प्रेरित करता है। एक्ट्रेस ने उदाहरण देते हुए याद किया कि एक बार उनकी मां ने दूसरों की आलोचना के बावजूद साड़ी के बजाय सलवार कमीज पहनने का फैसला किया था।

अमेरिका का तो पता नहीं पर वेस्टइंडीज में ये होगी टीम इंडिया की सबसे बड़ी ताकत

नई दिल्ली। वेस्टइंडीज और अमेरिका की संयुक्त मेजबानी में अगले महीने से टी20 वर्ल्ड कप की शुरुआत हो रही है। इस समय आईपीएल-2024 में जमकर रन बरस रहे हैं लेकिन टी20 वर्ल्ड कप में अगर बल्लेबाज रनों के लिए संघर्ष करते हुए दिखाई दें तो हैरान नहीं होगी क्योंकि वहां की पिचें धीमी रहेंगी और इसलिए भारत के पूर्व कप्तान अनिल कुंबले को लगता है कि जिस टीम के पास अच्छे स्पिनर होंगे उनका पलड़ा भारी रहेगा।कंबुले ने कहा कि वेस्टइंडीज में खासकर स्पिनरों का रोल काफी अहम रहेगा और इसलिए जिस टीम के पास जितने अच्छे स्पिनर होंगे वो टीम उतनी मजबूत नजर आएगी। भारतीय टीम ने इस

वर्ल्ड कप के लिए चार स्पिनर चुने हैं जिनमें कुलदीप यादव, युजवेंद्र चहल, रवींद्र जडेजा, अक्षर पटेल के नाम शामिल हैं। देखा जाए तो भारत से बेहतर स्पिनर शायद ही किसी टीम के पास हों।

इन टीमों को होगा फायदा

जियो सिनेमा द्वारा आयोजित कराई गई प्रेस मीट में कुंबले ने दैनिक जागरण संवाददाता द्वारा पूछे गए सवाल का जवाब देते हुए कहा कि वेस्टइंडीज में खासतौर पर स्पिनरों को मदद मिलेगी। उन्होंने कहा, "अमेरिका में पता नहीं कैसे पिच होंगे। वहां ड्रॉपइन पिच लगाए जाएंगे। वेस्टइंडीज में तो जरूर मदद मिलेगा, अमेरिका का पता नहीं, लगता है अच्छे विकेट होंगे। हां, स्पिनर्स जरूर गेम में आएंगे क्योंकि आईपीएल में आप देखें कि जो चार टीमें क्वालिफाई कर सकती हैं उनमें स्पिनरों का योगदान अहम रहा है। मुझे लगता है कि वर्ल्ड कप में भी स्पिनरों का योगदान रहेगा।" जियो सिनमें पर आईपीएल के लिए एक्सपर्ट की भूमिका निभा रहे कुंबले ने कहा, "हां काफी लोग फॉर्म में नहीं हैं लेकिन जब आप एक ब्रेक लेकर दूसरे वातावरण में आ जाते हैं तो फॉर्म अपने आप ही आ जाता है।

एक नजर

बीमार पड़े बच्चों को अस्पताल से मिली छुट्टी

जयन्त प्रतिनिधि।

पौड़ी : फूड प्वाइजनिंग से बीमार पड़े उच्च प्राथमिक विद्यालय पैडुल के छः छात्रों के स्वास्थ्य में सुधार होने के बाद उन्हें गुरुवार को जिला अस्पताल से छुट्टी मिल गई। सभी छात्रों को पूरी रात चिकित्सकों की निगरानी में रखा गया। विधायक पौड़ी व एसडीएम सदर ने अस्पताल पहुंचकर बच्चों का हालचाल जाना। वहीं, डीईओ बेसिक पौड़ी ने बीईओ पौड़ी से मामले की जांच कर तत्काल रिपोर्ट तलब की है।

बीते बुधवार को उच्च प्राथमिक विद्यालय पैडुल के 6 बच्चे स्कूल में मिड डे मीड का भोजन करने के बाद घर जाकर बीमार हो गए थे। डीईओ बेसिक शिक्षा नागेंद्र बर्त्वाल ने बताया कि कक्षा 7 के मनोज, वंश, आयुष, सक्षम, 8वीं के संचित और 6वीं के अभिनव को समय पर जिला अस्पताल पहुंचाया गया। जहां चिकित्सकों ने उनका उपचार किया और पूरी रात बच्चों को निगरानी में रखा। एमएस डॉ. अडबाला विजय बाबू ने बताया कि बच्चों का स्वास्थ्य अब पूरी तरह से ठीक है। जिसके चलते उन्हें दोपहर को अस्पताल से छुट्टी दे दी गई। डीईओ बेसिक शिक्षा नागेंद्र बर्त्वाल ने बताया कि मामले की जांच बीईओ पौड़ी को सौंपकर तत्काल रिपोर्ट उपलब्ध कराए जाने के निर्देश दिए गए हैं। जांच के बाद ही अग्रिम कार्रवाई अमल में लाई जाएगी।

स्वास्थ्य शिविर 19 से

जयन्त प्रतिनिधि।

पौड़ी : आह्वान संस्था की ओर से 19 और 20 मई को पौड़ी के रामलीला मैदान में निशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया जाएगा। शिविर में आने वाले लोगों के स्वास्थ्य की जांच की जाएगी। आह्वान संस्था की अध्यक्ष प्रियंका थपलियाल ने बताया कि अपोलो हॉस्पिटल के सहयोग से पौड़ी के रामलीला मैदान निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया जाएगा। जिसमें मरीजों के स्वास्थ्य की जांच की जाएगी। बताया कि अस्पताल की विशेषज्ञ चिकित्सकों द्वारा उन्हें निःशुल्क परामर्श भी दिया जाएगा। शिविर में सभी प्रकार की जांच भी होंगी।

दिव्यांशु ने छात्रों को दिए सफलता के टिप्स

श्रीनगर गढ़वाल : रेनबो पब्लिक स्कूल के पूर्व छात्र दिव्यांशु का सशस्त्र सेवा बल में स्थाई कमीशन इन ऑफिसर एंट्री के जरिये सेना में चयन होने पर गुरुवार को विद्यालय में उनका स्वागत किया गया।

दिव्यांशु ने सभी छात्र-छात्रों को एग्जाम की तैयारी से संबंधित बातों को बताया और करियर को लेकर भी उनका मार्ग दर्शन किया। इस अवसर पर विद्यालय की प्रधानाचार्य डॉ. रेखा उनियाल ने दिव्यांशु और उनके परिवार को बधाई दी। (एजेंसी)

पेयजल आपूर्ति सुचारू न होने से आक्रोशित लोगों ने किया प्रदर्शन

श्रीनगर गढ़वाल : डुंगरीयों श्रीकोट गंगानाली में पेयजल आपूर्ति सुचारु करने की मांग को लेकर गुरुवार को लोगों ने जल संस्थान कार्यालय में प्रदर्शन किया। इस मौके पर स्थानीय लोगों ने ईई को ज्ञापन सौंपकर जल्द आपूर्ति सुचारु करने की मांग उठाई गुरुवार को प्रदर्शन के दौरान स्थानीय लोगों ने कहा कि विगत एक हफ्ते से पेयजल आपूर्ति सुचारु न होने से लोगों को खासी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है।

उन्होंने जल्द से पेयजल आपूर्ति को सुचारु रूप से शुरू करने की मांग की है। पूर्व ग्राम प्रधान श्रीकोट राजेश्वरी रावत, यशीश रावत, मंजू चमोला, रजनी परमार ने कहा कि पाइन लाइन पुरानी होने के चलते पानी घरों तक नहीं पहुंच पा रहा है। जिससे लोगों को पानी ढोने को मजबूर होने पड़ रहा है। कहा कि बढ़ती गर्मी के साथ ही पेयजल आपूर्ति सुचारु न होने से लोगों को खासी दिक्कत हो रही हैं।

उन्होंने डुंगरीयों श्रीकोट के कनेक्शन को नये पाइन लाइन से जोड़ने की मांग की है। इस बाबत पर डुंगरीयों श्रीकोट के स्थानीय लोगों ने जल संस्थान के अधिशासी अभियंता को ज्ञापन प्रेषित किया।(एजेंसी)

विश्वविद्यालय में क्वालिटी शिक्षा देने पर विशेष फोकस : प्रो. जोशी

टिहरी : श्रीदेव सुमन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एनके जोशी ने गुरुवार को विवि मुख्यालय में आयोजित पत्रकार वार्ता में कहा कि एनईपी के तहत विश्वविद्यालय में क्वालिटी शिक्षा देने पर विशेष फोकस करने के साथ ही विश्वविद्यालय मुख्यालय चंबा को गतिविधियों का केंद्र बनाने का काम तेजी से किया जा रहा है। जिसके सुखद परिणाम भी सामने आने लगे हैं।

पुलिया मरम्मत की नहीं ले रहे सुध, वर्षाकाल में बढ़ेगी समस्या

- गिवईस्रोत गेदेरे में बदहाल स्थिति में पड़ी है पुलिया
- शिकायत के बाद भी ध्यान नहीं दे रहा सरकारी सिस्टम

कोटद्वार के गिवईस्रोत गदेरे में क्षतिग्रस्त हालत में खड़ी पुलिया

जयन्त प्रतिनिधि। कोटद्वार : वर्षाकाल के दौरान जर्जर हुई गिवईस्रोत पुलिया की अब तक सुध नहीं ली गई है। नतीजा कुछ माह बाद शुरू होने वाले वर्षाकाल में वार्डवासियों की समस्या बढ़ सकती है। जबकि, वार्डवासी लगातार सरकारी सिस्टम से पुलिया मरम्मत की भी मांग उठा रहे हैं। शिकायत के बाद भी समस्या का निराकरण नहीं होने से वार्डवासियों में आक्रोश बना हुआ है।

बीते अगस्त माह में हुए अतिवृष्टि ने क्षेत्र में खूब तबाही मचाई थी। यही नहीं गिवईस्रोत गदेरे के तेज बहाव में दो बसें भी बह कर वार्डों को जोड़ने वाली पुलिया में फंस गई थी। बाद में क्रेन की मदद से बस को बाहर निकाल दिया गया था। लेकिन, पुल के पिलरों को काफी नुकसान पहुंचा था। पुल के किनारे लगी रेलिंग भी टूट गई थी। ऐसे में पुलिया से गुजरने वाले लोगों के साथ ही दोपहिया वाहन चालकों को खतरा बना रहता है। पूर्व में क्षेत्र के निरीक्षण को पहुंची विधानसभा अध्यक्ष ऋतु खंडूडी ने जल्द पुलिया की स्थिति सुधारने का आश्वासन दिया था। लेकिन, अब तक हालात जस के तस बने हुए हैं।

तो फिर बढ़ेगी चुनौती

गिवईस्रोत गदेरे पर मोहल्लों को जोड़ने वाली पुलिया वर्षाकाल के समय चुनौती बन सकती है। दरअसल, कई बार नदी में बहकर आए पेड़ पिलरों में फंस जाते हैं। जिससे क्षेत्र में जलभराव की स्थिति भी पैदा होती है। कमजोर पुलिया कब धराशायी हो जाए, कुछ कहा नहीं जा सकता। क्षेत्रवासियों ने सरकारी सिस्टम से जल्द पुलिया की मरम्मत करवाने की मांग की है।

प्रभावितों पर जबरन मुआवजा लेने का दबाव बना रहा प्रशासन

एनएचएआई विरोध संघर्ष समिति ने प्रशासन के रवैये पर जताया आक्रोश

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वार : एनएचएआई विरोध संघर्ष समिति ने प्रशासन पर कोटद्वार बाईपास प्रभावितों की अनदेखी का आरोप लगाया है। कहा कि प्रशासन प्रभावितों पर जबरन मुआवजा लेने का दबाव बना रहा है। जबकि, समिति बाजार रेट पर प्रभावितों को मुआवजा देने की मांग उठा रही है। यही नहीं मुआवजा न लेने की स्थिति में एक महीने के अंदर नोटिस जारी कर मकानों को तोड़ने व जमीन खाली करवाने की भी धमकी दी जा रही है।

प्रभावितों ने बताया कि बाईपास निर्माण में लोगों की खून पसीने की कमाई से खरीदी गई जमीन और मकान अधिग्रहीत किए गए हैं। मुआवजा निर्धारण में बाजार रेट तय होना चाहिए था। लेकिन, प्रशासन मुआवजा देने में लापरवाही दिखा रहा है। समिति के अध्यक्ष आशीष रावत ने कहा कि अपर जिलाधिकारी इला गिरि रतनपुर क्षेत्र में प्रभावितों से मिलने पहुंची थी। जहां पर एडीएम ने कई प्रभावितों के घरों में जाकर जमीन, मकानों का मुआवजा लेने के लिए दबाव डाला।

कहा कि अभी तक प्रशासन पीड़ितों की समस्याओं का समाधान करने में पूरी तरह से नाकाम रहा है, जिसके लिए प्रभावित कई बार प्रशासन से समस्या का समाधान करने की गुहार लगा चुके है। अभी तक प्रशासन गोल खातों के प्रकरण को भी नहीं सुलझा पाया है। कई सालों से मकान बनाकर रहने वाले लोगों के लिए भी किस प्रकार मुआवजा दिया जाना है, यह भी स्पष्ट नहीं है। भूमिधरी व रजिस्ट्री की जमीनों का मुआवजा भी बाजार भाव से नहीं दिया जा रहा है। कहा कि अभी तक आर्बिटेटर की नियुक्त नहीं किया गया है।

आर्बिटेटर नियुक्त न होने से प्रभावित अपनी बात नहीं रख पा रहे है। प्रशासन की तरफ से प्रभावितों को धमकाया जाना दुर्भाग्यपूर्ण है। कहा कि अब समिति प्रशासन के रवैए के खिलाफ मुख्यमंत्री को एक ज्ञापन सौंपेगी। साथ ही हाईकोर्ट में भी प्रशासन के माध्यम से प्रभावितों पर अनैतिक दबाव बनाए जाने को लेकर भी शिकायत की जाएगी।

चेक बाउंस मामले में महिला को एक वर्ष का कारावास

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वार : न्यायायिक मजिस्ट्रेट (प्रथम श्रेणी) भावना पांडेय की अदालत ने चेक बाउंस के एक मामले में महिला को एक वर्ष का कारावास व 26 लाख रुपये के अर्थदंड की सजा सुनाई है।

कालाबड़ निवासी परिवादिनी कमला नेगी ने न्यायालय को बताया कि मानपुर निवासी नीलम ने अपना व्यवसाय शुरू करने के लिए उनसे 24 लाख रुपये लिए थे। जिसके बाद उन्होंने 22 लाख रुपये नीलम के बैक खाते में डाले और दो लाख रुपये नगद हाथ में दिए। बताया कि पैसे मिलते ही नीलम ने अप्रैल 2022 तक उक्त घनराशि को वापस देने का भी वादा किया। लेकिन, कई माह बीत जाने के बाद भी नीलम ने धनराशि वापस नहीं दी। बताया कि इस संबंध में जब उन्होंने नीलम से बात की तो वह आज-कल की बात को टालती रही। अक्टूबर 2022 को नीलम ने अपना हस्ताक्षर किया हुआ चेक उन्हें दिया।

बताया कि जब उन्होंने उक्त चेक को अपने कुंभीचौड़ स्थित बैंक में लगाया तो वह बाउंस हो गया। बताया कि नवंबर 2022 को उन्होंने अपने अधिवक्ता के माध्यम से नीलम को 15 दिन के भीतर धनराशि वापस देने का नोटिस दिया। लेकिन, उसने इसका भी कोई जवाब नहीं दिया।

अधिवक्ता आशुतोष कंडवाल ने बताया कि मामले में नीलम को एक वर्ष के साधारण कारावास की सजा व 26 लाख रुपये की अर्थदंड की सजा सुनाई गई है। जिसमें से 25 लाख रुपये परिवादिनी को दिए जाएंगे।

नाबालिग से दुष्कर्म करने वाला आरोपी गिरफ्तार

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वार : क्षेत्र की एक नाबालिग से दुष्कर्म करने वाले आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी पीड़िता को लगातार ब्लैकमेल भी कर रहा था। जिसके कारण पीड़िता ने आत्महत्या करने का भी प्रयास किया। पीड़िता के परिवार की ओर से कोतवाली में तहरीर दी गई थी। जिसमें उन्होंने बताया था कि अंकित बाथम नामक युवक उनकी नाबालिग बेटी को पिछले कई माह से परेशान कर रहा है। यही नहीं आरोपी ने नाबालिग के साथ दुष्कर्म करते हुए उसे ब्लैकमेल भी किया। जिससे नाबालिग ने आत्महत्या करने का भी प्रयास किया। कोतवाली प्रभारी निरीक्षक मणिभूषण श्रीवास्तव ने बताया कि मामले में आरोपी के खिलाफ पोक्सो के तहत मुकदमा दर्ज किया गया। साथ ही उसे पुराना फायर स्टेशन के समीप से गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया है।

मानकों की अनदेखी, रूकवाया निर्माण कार्य

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वार : विधानसभा अध्यक्ष श्रीमती ऋतु खण्डूड़ी ने कोटद्वार विधानसभा के अंतर्गत सिंचाई विभाग के अधिकारियों के साथ सनेह व ग्रास्टनगंज में हो रहे विकास कार्यों का निरीक्षण किया। उन्होंने ग्रास्टनगंज से सनेह तक लगभग 4 करोड़ की धनराशि से बन रही सिंचाई नहर का निरीक्षण कर मानक पूर्ण ना होने पर काम रुकवाने के आदेश दिए। साथ ही रोड किनारे मलवा रखे जाने पर भी विस अध्यक्ष ने नाराजगी व्यक्त कर अधिकारियों को उसे साफ करवाने के निर्देश दिए।

निर्माण कार्यों का निरीक्षण करती विस अध्यक्ष

विधानसभा अध्यक्ष ने खो नदी पर बन रही सुरक्षा दीवार का भी निरीक्षण किया। उन्होंने अधिकारियों को बरसात से पूर्व निर्माण कार्य पूर्ण करने के सख्त निर्देश दिए। इस दौरान विस अध्यक्ष ने सनेह में बन रही पुलियाओं का भी निरीक्षण किया। कहा कि निर्माण कार्य में गुणवत्ता का विशेष ध्यान रखें। निरीक्षण के दौरान ग्रास्टनगंज में सनेह तक बनाई जा रही सिंचाई नहर में मानकों की अनदेखी सामने आई। जिसके बाद विस अध्यक्ष ने निर्माण कार्य रूकवाने के निर्देश दिए। कहा कि किसी भी निर्माण कार्य में गुणवत्ता का विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। इस मौके पर गोपाल दत्त जखमोला, पार्षद धीरज नेगी, जगदीश नेगी, केसर सिंह, जगमोहन सिंह, रेनू कोटियाल, मीना आदि मौजूद रहे।

प्राकृतिक आपदाओं से निपटने के लिए पूर्व तैयारी आवश्यक

जयन्त प्रतिनिधि।

पौड़ी : डॉ. आर.एस. टोलिया उत्तराखंड प्रशासन अकादमी नैनीताल द्वारा विकासखंड थलीसैंण में दो दिवसीय आपदा जोखिम न्यूनीकरण विषय पर प्रशिक्षण शुरू हुआ। प्रशिक्षण में आपदा से निपटने के लिए क्या-क्या तैयारी होनी चाहिए उस पर चर्चा की गई।

प्रशिक्षण में डॉ. आर.एस. टोलिया उत्तराखंड प्रशासन अकादमी नैनीताल के कार्यक्रम निदेशक डॉ. ओम प्रकाश ने प्रशिक्षण की रूपरेखा के बारे में विस्तृत जानकारी दी। कहा कि प्राकृतिक आपदाओं से निपटने के लिए पूर्व तैयारी आवश्यक है। इस दौरान उन्होंने प्रशिक्षण में पूर्व में घटित घटनाओं, आपदा के दौरान और आपदा के बाद किए जाने वाले कार्यों के बारे में वहां उपस्थित अधिकारियों व कार्मिकों को जानकारी दी। उन्होंने प्रशिक्षण में आपदा प्रबंधन के नए आयामों और रिस्पांस टाइम को कम से कम करने के संबंध में भी बताया। प्रशिक्षण में उपजिलाधिकारी श्रीनगर नूपुर वर्मा ने कहा कि आपदा प्रबंधन को लेकर यह प्रशिक्षण महत्वपूर्ण साबित होगा। कहा कि आपदा के दौरान आवश्यक सेवाओं से जुड़े विभागों की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। उन्होंने कहा कि इस प्रशिक्षण से आपदा के समय आने वाली चुनौतियों से निपटने में मदद मिलेगी। इस दौरान प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे अधिकारियों ने अपने-अपने अनुभव, सवाल और सुझाव भी रखें। प्रशिक्षण में खंड विकास अधिकारी टीकाराम कोठियाल, अग्निशमन अधिकारी सुनील दत्त तिवारी सहित अन्य अधिकारी, कार्मिक व ग्रामीण उपस्थित थे।

गैस सिलेंडर में लगी आग, महिला व पुरुष झुलसे

जयन्त प्रतिनिधि। कोटद्वार : नगर निगम क्षेत्र के अंतर्गत सिम्मलचौड़ में घरेलू गैस सिलेंडर में आग लगने से एक महिला व पुरुष झुलस गए। आसपास मौजूद लोगों ने दोनों को उपचार के लिए राजकीय बेस चिकित्सालय कोटद्वार पहुंचाया। जहां दोनों की गंभीर हालत को देखते हुए हायर सेंटर रेफर कर दिया गया है। घटना गुरुवार की है। सिम्मलचौड़ निवासी संध्या देवी अपने घर में खाना बना रही थी। इसी दौरान अचानक गैस पाइप लीक होने लगा और उसने आग पकड़ ली। इसके बाद स्वजनों ने गैस ठीक करने के लिए अपने पड़ोस में रहने वाले उमेश को बुलाया। जैसे ही उमेश पाइप की आग बुझाने का प्रयास कर रहा था। आग और अधिक भड़क गई और उमेश व संध्या उसकी चपेट में आ गए। आसपास मौजूद लोग दौड़ते हुए घर के भीतर पहुंचे और दोनों को राजकीय बेस चिकित्सालय कोटद्वार पहुंचाया। जहां चिकित्सकों ने दोनों को हायर सेंटर रेफर कर दिया।

सारांश कंडारी बना मिस्टर कोटद्वार

आयोजित प्रतियोगिता में प्रतिभाग करते प्रतिभागी

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वार : राणा क्रिकेट एकेडमी और स्कालर्स एकेडमी के संयुक्त तत्वावधान में गुरुवार को मिस्टर और मिस कोटद्वार सीजन-4 का आयोजन किया गया। तड़ियाल चौक स्थित एक मॉल के सभागार में आयोजित कार्यक्रम का शुभारंभ हंस फाउंडेशन प्रदेश प्रभारी पदमेंद्र सिंह बिष्ट ने किया।

प्रतियोगिता में सारांश कंडारी को मिस्टर कोटद्वार और ऋतु रावत को मिस कोटद्वार चुना गया। कार्यक्रम संयोजक सूरज राणा ने बताया कि प्रतियोगिता में कोटद्वार के आसपास के कई प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया। इस अवसर पर रंजना रावत, तरुण जदली, ऋषभ पोखरियाल, तरुण ध्यानी और भाष्कर प्रजापति आदि मौजूद रहे।

सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि मैंने हाईस्कूल की परीक्षा वर्ष 2006 में अनुक्रमांक 0060149 से रा.उ.मा.वि. चौरा एवं इंटरमीडिएट की परीक्षा वर्ष 2008 अनुक्रमांक 0037287 से राजकीय इंटर कॉलेज चौकीसैंण से उत्तीर्ण की। मेरे हाईस्कूल एवं इंटरमीडिएट के अंकपत्र सह प्रमाणपत्र वास्तव में खो गये है। जो काफी खोजबीन के बावजूद भी नहीं मिल रहे है।

मीना पुत्री कुंवर सिंह निवासी ग्राम सौन्टी तलगांव, पोस्ट बंगाली, पट्टी ढाईज्यूली, तहसील चाकीसैंण, जनपद पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड।

बोर्ड परीक्षाओं में अव्वल रहने वाले विद्यार्थियों को किया सम्मानित

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वार : उत्तराखंड बोर्ड परीक्षाओं में अव्वल स्थान पाने वाले विद्यार्थियों को विधानसभा अध्यक्ष ऋतु खंडूडी भूषण ने सम्मानित किया। विस अध्यक्ष ने विद्यार्थियों को जीवन में आगे बढ़ने के लिए भी प्रेरित किया। कहा कि लक्ष्य तय करके मेहनत करने वाले विद्यार्थियों को अवश्य ही मंजिल मिलती है।

कोटद्वार में आयोजित कार्यक्रम के दौरान मेधावी विद्यार्थियों के साथ विस अध्यक्ष ऋतु खंडूड़ी भूषण

विधानसभा अध्यक्ष ने राजकीय बालिका इंटर कालेज कलालघाटी, जयदेवपुर, घमंडपुर सहित अन्य विद्यालयों के 93 विद्यार्थियों को सम्मानित किया। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों को लक्ष्य तय कर जीवन में आगे बढ़ना चाहिए। मेहनत करने वाले विद्यार्थियों को अवश्य ही सफलता मिलती है। कहा कि शिक्षक हमारे जीवन का रास्ता तैयार करते है व बच्चों को तरासने का कार्य भी एक शिक्षक का होता है। कहा कि सरकार लगातार शिक्षा व्यवस्था को बेहतर बनाने का कार्य कर रही है। इस मौके पर खंड शिक्षा अधिकारी अमित कुमार चंद, शिक्षक अभिभावक संघ के अध्यक्ष महेंद्र अग्रवाल, राजकीय इंटर कॉलेज के प्रधानाचार्य मुकेश रावत, विजेंद्र सिंह नेगी आदि मौजूद रहे।

सतपुली में रजिस्ट्रेशन केंद्र खोलने की मांग

जयन्त प्रतिनिधि।

सतपुली : नयारघाटी चिह्नित उत्तराखंड राज्य आंदोलनकारी सतपुली के अध्यक्ष पुष्पेंद्र राणा ने सतपुली के बिलखेत से हेली सेवा शुरू करने और सतपुली में चारधाम यात्रा का रजिस्ट्रेशन केंद्र खोलने की मांग की है।

प्रेस को जारी बयान में आंदोलनकारी ने चारधाम यात्रा का कोटद्वार के साथ ही सतपुली में भी रजिस्ट्रेशन केंद्र खोले जाने की सिफारिश की है। जिससे कि कोटद्वार के रास्ते आने वाले यात्रियों को लाभ मिल सके। उन्होंने कहा की चार धाम यात्रा की वापसी पौड़ी सतपुली कोटदार के रास्ते की जाए। जिससे कि यहां के स्थानीय लोगों को स्वरोजगार व लगातार पौड़ी जनपद में होते पलायन पर रोक लग सके।

उत्तर रेलवे

आज़ादी का अमृत महोत्सव

NO.S/WS/store/tree/24-25/MB दिनांक – 15.05.2024

नीलामी सूचना

सहायक मंडल अभियंता/हापुड़ के अधीन माननीय प्रधान मंत्री जी द्वारा अमृत भारत स्टेशन योजना में बाधक बुलंदशहर स्टेशन यार्ड में खड़े (77) खतरनाक पेड़ों की नीलामी **सहायक मंडल अभियंता/हापुड़** के कार्यालय में की जायेगी नीलामी के इच्छुक पार्टियों को आमंत्रित करता है कि वे नीलामी में भाग लें।

नीलामी स्थानः– सहायक मंडल अभियंता/हापुड़ के अधीन दिनांक 28.05.2024 को समय प्रातः 11:00 बजे नीलामी की जायेगी।

3. प्रत्येक क्रेता को नीलामी के दिन सहायक मंडल अभियंता/मुरादाबाद के कार्यालय में रुपये 100/– केवल नकद जमा करने होंगे जो वापस नहीं किए जाएंगे तथा **भारतीय स्टेट बैंक या अन्य राष्ट्रीयकृत बैंक के द्वारा प्रवर मण्डल वित्त प्रबन्धक उत्तर रेलवे मुरादाबाद के पक्ष में रुपये 8000/– के मूल्य का डिमाण्ड ड्राफ्ट जमा करना होगा।**

2. प्रत्येक क्रेता को जो नीलामी में भाग ले रहा है उसे नीलामी के द्वारा बिक्री से सम्बन्धित नियमों एवं भत्तों की जानकारी रखनी होगी।

3. सफल खरीददार को उसी दिन भारतीय स्टेट बैंक या अन्य राष्ट्रीय कृत बैंक के द्वारा प्रवर मण्डल वित्त प्रबन्धक मुरादाबाद के पक्ष में निम्नलिखित दर से डिमाण्ड ड्राफ्ट नगद स्टेशन अर्निंग में जमा करना होगा।

क. रू0 1,00,000/– में अधिक की खरीद पर बिक्री मूल्य का 10 प्रतिशत एवं कम से कम रू0 25,000/– (जो भी अधिकतम हो)।

ख. नीलामी की कीमत का बाकी पैसा 10 दिन के अन्दर जमा करना होगा। (नीलामी के दिन को जोड़कर)।

ग. जी.एस.टी @ 18% कुल कीमत पर देय होगा जो कि 10 दिन के अन्दर जमा करना होगा। (नीलामी के दिन कोजोड़कर)

4. पैसे जमा करने की दिनांक से 60 दिन के अन्दर कार्य सम्पूर्ण करना होगा। (नीलामी के दिन को जोड़कर)

5. रेलवे को अधिकार होगा कि वह किसी भी समय कार्य को बन्द कर सकती है। ऐसी परिस्थिति में बची हुयी धनराशी बिना ब्याज के वापिस कर दी जाएगी।

6. पेड़ों का सम्पूर्ण विवरण लोकेशन सहित मण्डल कार्यालय मुरादाबाद में उपलब्ध रहेगा।

7. खरीददार पेड़ों की लोकेशन को ध्यान में रखते हुए रेट बोलें।

8. माल की सुपुर्दगी एवं डिलीवरी सीनियर सेक्शन इंजीनियर/कार्य आर०पी०एफ० एवं आई०एस०ए० की उपस्थिति में की जाएगी।

9. बाकि रकम 10 दिन के अंदर जमा करनी होगी (नीलामी के दिन को जोड़ कर) अन्यथा पहली रकम जो जमा की गयी है वो जब्त हो जाएगी।

10. खरीददार रेलवे की जमीन पर कोई कच्ची या पक्की छोपड़ी इत्यादि नहीं बना सकता।

11. बोली बेस प्राइस में नीचे नहीं लगायी जाएगी।

12. डिमाण्ड ड्राफ्ट सहायक मंडल अभियंता/हापुड़ में नीलामी के दिन प्रात 9:00 बजे से 10:30 तक जमा किए जायेंगे बाद में कोई डिमाण्ड ड्राफ्ट स्वीकार नहीं किया जाएगा।

प्रवर मंडल अभियंता/चतुर्थ
उत्तर रेलवे मुरादाबाद

1479/2024

ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ

पाइप लाइन लीकेज से सड़क पर रोज बह रहा हजारों लीटर पानी

जयन्त प्रतिनिधि।

पौड़ी : शहर में जगह-जगह पेयजल लाइन लीकेज हो रही है। जिससे हजारों लीटर पेयजल सड़कों पर बहकर बर्बाद हो रहा है। लेकिन जल संस्थान पेयजल लाइन को दुरुस्त तक नहीं कर रहा है, जहां जल संस्थान दूसरों को एक-एक बूंद पानी बचाने का संदेश दे रहा है. वहीं, जल संस्थान लीकेज के माध्यम से रोजाना लाखों लीटर पानी बहा रहा है। वहीं, जल संस्थान के अधिकारियों का कहना है कि जहां से भी लीकेज की शिकायतें मिल रही है, वहां लीकेज को ठीक किया जा रहा है।

गर्मियां शुरू होते ही एक ओर जहां पेयजल किल्लत शुरू होने लगी है, वहीं दूसरी ओर शहर के लोअर बाजार, कांडई और च्वींचा गांव में कई स्थानों में पेयजल लाइन लीकेज हो रही है। जिससे हर दिन हजारों लीटर पेयजल सड़कों और नालियों में बहकर बर्बाद हो रहा है। वार्ड नंबर 5 के पूर्व सभासद मो. आसिफ ने बताया कि पिछले लंबे समय से उनकी दुकान के पास पेयजल लाइन लीकेज हो रही है। जिससे हजारों लीटर पेयजल सड़कों पर बहकर बर्बाद हो रहा है। शहर के कांडई गांव, च्वींचा गांव में कई जगहों पर पेयजल लाइन लीकेज हो रही है। वहीं, जल संस्थान के अधिशासी अभियंता एसके रॉय का कहना है कि जहां से भी लीकेज की शिकायत मिल रही है वहां लीकेज को ठीक करने का काम किया जा रहा है।

घुड़दौड़ी कॉलेज के छात्रों को मिला प्लेसमेंट

जयन्त प्रतिनिधि। पौड़ी : जीबी पंत प्रौद्योगिकी एवं तकनीकी संस्थान घुड़दौड़ी के मैकेनिकल, मैकेनिकल मैन्युफैक्चरिंग एवं सिविल अभियांत्रिकी विभाग के छात्र-छात्राओं का लिक्सिल विंडो सिस्टम प्रा. लि. और महिंद्रा इंडिया प्रा.लि. विभाग में चयन हुआ है। चयनित छात्रों को लिक्सिल विंडो सिस्टम प्राइवेट लिमिटेड में 4.75 लाख और महिंद्रा इंडिया प्रा.लि. विभाग में 4.25 लाख के वार्षिक पैकेज मिलेगा।

संस्थान के निदेशक डा. वीएन काला ने बताया कि मैकेनिकल, मैकेनिकल मैन्युफैक्चरिंग एवं सिविल अभियांत्रिकी विभाग के तनुज नेगी, सूरज पाल सिंह पटवाल, विनायक गुप्ता, शिवांश चौहान, निकिता खरोला, साक्षी नेगी, शिवम खंडूड़ी, आलोक जोशी, अरुण बिष्ट, संदीप राणा का चयन लिक्सिल विंडो सिस्टम प्राइवेट लिमिटेड में 4.75 लाख के वार्षिक पैकेज पर हुआ है। जबकि मैकेनिकल एंड इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग डिपार्टमेंट प्लेसमेंट ड्राइव में परघी नेगी, नीरू चौहान, हस्बुन निशा, शालिनी पटवाल का महिंद्रा इंडिया प्रा.लि. विभाग में 4.25 लाख के वार्षिक पैकेज पर चयन हुआ है। आयोजन में संस्थान के ट्रेनिंग एवं प्लेसमेंट सेल के ओआईसी डा. कमलजीत सिंह भाटिया, मैकेनिकल एवं मैकेनिकल मैन्युफैक्चरिंग विभागाध्यक्ष डा. आशुतोष गुप्ता, सिविल अभियांत्रिकी विभागाध्यक्ष डा. भीष्म सिंह खाती, प्लेसमेंट समन्वयक डा. शिरीश चंद्रवंशी, सुमित राणा आदि शामिल रहे।

रंगारंग कार्यक्रमों के साथ मनाया वार्षिकोत्सव

जयन्त प्रतिनिधि। सतपुली : राजकीय इंटर कालेज कीर्तिखाल का वार्षिकोत्सव गुरुवार को धूमधाम से मनाया गया। इस मौके पर कालेज के छात्र-छात्राओं ने रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों की बेहतरीन प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि खंड शिक्षाधिकारी द्वारीखाल सुरेंद्र सिंह नेगी, विशिष्ट अतिथि क्षेत्र पंचायत सदस्य कुल्हाड भारत सिंह रावत ने संयुक्त रूप से कीर्ति सुधा पत्रिका का भी विमोचन किया। साथ ही उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्रों को सम्मानित किया। प्रधानाचार्य मोहन सिंह रावत ने अतिथियों का आभार जताया। कार्यक्रम में शिव प्रसाद अग्रवाल, गणेश चन्द्र डोबरियाल, धीरेंद्र सिंह राणा, संजय सिंह, प्रदीप नेगी, सर्वेश्वर प्रसाद, अनीता रावत, सुषमा नैनवाल मौजूद रहे। संचालन इंद्रपाल ने किया।

एक नजर

डीएलएड प्रशिक्षुओं ने दी कोर्ट जाने की चेतावनी

देहरादून। डीएलएड प्रशिक्षुओं ने प्राथमिक शिक्षक भर्ती उनका प्रशिक्षण पूरा होने से पहले निकालने का विरोध किया है। इस मामले को लेकर 2019–20 के प्रतीक्षा सूची के प्रशिक्षुओं ने कोर्ट जाने की भी चेतावनी दी है। प्रशिक्षुओं का कहना है कि उन्होंने वर्ष 2020 में डीएलएड प्रवेश परीक्षा दी थी। परंतु कोविड महामारी व विभागीय लापरवाही के कारण उनका प्रशिक्षण डेढ़ वर्ष (18 माह) विलम्ब से चल रहा है। जिस कारण डीएलएड बैच 2019–20 को पूरा होने में 2 वर्ष के स्थान पर 4 वर्ष से अधिक का समय लग रहा है। प्रशिक्षुओं का कहना कि उनका प्रतीक्षा सूची में चयन हुआ था, जिस कारण उनका सीधे द्वितीय सेमेस्टर में प्रवेश हुआ और उनके द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ सेमेस्टर पूर्ण हो चुके हैं। और उनका शेष (प्रथम) सेमेस्टर जून माह में पूर्ण हो जाएगा। प्रशिक्षु अमन, दीपक, प्रदीप, आयुष, किरन, पूजा, प्रियंका का कहना है कि यदि जून माह से पूर्व विभाग भर्ती विज्ञापन जारी करता है तो वे कोर्ट जाने को मजबूर होंगे।

रेल कर्मचारियों ने मनाया काला दिवस

देहरादून। नार्दन रेलवे मेंस यूनियन से जुड़े रेल कर्मचारियों का आक्रोश बढ़ता जा रहा है। कर्मचारियों ने आरोप लगाया कि मुरादाबाद मंडल में सिग्नल और टीआरडी विभाग के कर्मचारियों का नियम के विपरीत ट्रांसफर किए गए हैं। गुरुवार को कर्मचारियों ने देहरादून रेलवे स्टेशन पर बाहों पर काला फीता बांधकर काला दिवस मनाया।इस मौके पर शाखा मंत्री कामरेड नरेश गुरुंग ने कहा कि रेल कर्मचारियों का उत्पीड़न किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। जब तक रेल प्रबंधन की ओर से नियम के विपरीत किए गए ट्रांसफर रद नहीं किए जाते हैं रेल कर्मचारी अपना विरोध जारी रखेंगे। उन्होंने जल्द सकारात्मक कार्यवाही नहीं होने पर बड़े आंदोलन की चेतावनी भी दी। विरोध जताने में वालों में आरएस राठी, मेहरबान सिंह, अनूप रावत, वीरेंद्र सिंह, गंगा चरण, अमित कुमार, सुमित कुमार आदि मौजूद रहे।

नेशनल चैंपियनशिप में सोनिया ने जीता गोल्ड

देहरादून। कलिंगा स्टेडियम भुवनेश्वर में 12 से 15 मई तक हुई 27वीं नेशनल फेडरेशन सीनियर एथलेटिक्स प्रतियोगिता 2024 में देहरादून की सोनिया ने गोल्ड मेडल जीतकर प्रदेश का नाम रोशन किया है। उत्तराखंड एथलेटिक्स के सचिव केजेएस कलसी ने बताया कि सोनिया ने 10000 मीटर रेस में पहला स्थान प्राप्त किया। उन्होंने 37 मिनट 15.29 सेकंड में अपनी रेस पूरी की। सोनिया महाराणा प्रताप स्पोर्ट्स कॉलेज रायपुर के सेंटर ऑफ एक्सीलेंस से वरिष्ठ कोच लोकेश कुमार से प्रशिक्षण ले रहीं हैं। पूर्व में भी उसके द्वारा कई मेडल जीते गए हैं। सोनिया की सफलता पर स्पोर्ट्स कॉलेज प्रशासन, उत्तराखंड एथलेटिक्स संघ ने हर्ष जताया है।

मोहल्ला स्वच्छता समितियों में हुए घोटाले की जांच हो

देहरादून। राष्ट्रीय सफाई कर्मचारी मजदूरी यूनियन ने मोहल्ला स्वच्छता समितियों में हुए घोटाले की जांच की मांग को लेकर गुरुवार को कलेक्ट्रेट पहुंचकर डीएम के माध्यम से मुख्यमंत्री को ज्ञापन भेजा। यूनियन के राष्ट्रीय महासचिव चौधरी नरेश वैध ने कहा कि नगर निगम में मोहल्ला स्वच्छता समिति के नाम पर करोड़ों रुपये का घोटाला हुआ है। पार्षदों ने अपने–अपने वार्ड में दस–दस फर्जी सफाई कर्मचारी दर्शाकर नगर निगम से भुगतान लिया है। उन्होंने मुख्यमंत्री से मामले की जांचकर पार्षदों के खिलाफ मुकदमा दर्ज करने की मांग की है। साथ ही उनको हुए भुगतान की रिकवरी करने की भी मांग की है। इस मौके पर प्रदेश प्रभारी मदनलाल ढिगिया, प्रदेश अध्यक्ष महिपाल सिंह लोहट, सलाहकार आशुतोष, अजय आदि मौजूद रहे।

वसंत विहार में महिला की चेन लूटने का आरोपी गिरफ्तार

देहरादून। काली मंदिर एंक्लेव, बसंत विहार में सब्जी लेकर लौट रही महिला की चेन लूटकर फरार हुए स्कूटर सवार को गुरुवार को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। आरोपी से पुलिस ने लूटी गई महिला की चेन और घटना में प्रयुक्त स्कूटर बरामद कर लिया। एसओ बसंत विहार महादेव उनियाल ने बताया कि द्रोणपुरी लेन तीन निवासी जितेंद्र थरेजा ने तहरीर दी। बताया कि उनकी पत्नी दीपा थरेजा बीते सोमवार रात करीब आठ बजे काली मंदिर एंक्लेव की तरफ गई थी। वहां से वह सब्जी लेकर वापस लौट रही थी। आरोप है कि इस दौरान पीछे से स्कूटर सवार आया। झपाटा मारकर उनकी पत्नी की सोने की चेन लूट ले गया।

मोदी सरकार में देश का रक्षा तंत्र मजबूत हुआ : महाराज

प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत 4 करोड़ पक्के घर बनें, 3 करोड़ और बनाने का संकल्प

जयन्त प्रतिनिधि।

देहरादून/लखनऊः आर्थिक समृद्धि के मामले में 2014 से अब तक मोदी सरकार के 10 वर्षों के कार्यकाल में हम भारत को 11वें स्थान से 5वें स्थान पर ले आये हैं। भाजपा के संकल्प पत्र के माध्यम से अब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारत को विश्व की तीसरी बड़ी आर्थिक शक्ति बनाने के संकल्प के साथ-साथ 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने की भी गारंटी दी है।उक्त बात प्रदेश के कैबिनेट मंत्री और भाजपा के स्टार प्रचारक सतपाल महाराज ने गुरुवार को कल्याणपुर, खुर्रम नगर लखनऊ में भारतीय जनता पार्टी के लोकसभा प्रत्याशी रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह के समर्थन में आयोजित विशाल चुनावी सभा को संबोधित करते हुए कही। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह का स्वास्थ्य कुछ खराब होने के कारण वह सभा में नहीं आ सके, लेकिन इस मौके पर उनके पुत्र नीरज सिंह के अलावा लखनऊ पूर्वी विधानसभा से विधानसभा उपचुनाव के प्रत्याशी ओ.पी. श्रीवास्तव ने जनसभा में प्रतिभाग किया। इसके पश्चात श्री महाराज राजनाथ सिंह का हालचाल जानने उनके आवास पर भी गये। चुनावी सभा को संबोधित करते हुए श्री महाराज ने कहा कि आर्थिक समृद्धि के मामले में मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद से भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था बन गया है। उन्होंने कहा कि भाजपा ने अयोध्या में राम मंदिर निर्माण, धारा 370 को हटाने और तीन तलाक को खत्म करने जैसे सभी वादे पूरे किए हैं। पीएम मोदी की उज्ज्वला योजना से देश की 10 करोड़ 35 लाख महिलाएं लाभान्वित हुई हैं। हमने सस्ता गैस सिलेंडर घर-घर पहुंचा है अब सस्ती रसोई गैस को पाइप लाइन के माध्यम से पहुंचने का संकल्प लिया है। भाजपा के स्टार प्रचारक श्री महाराज ने कहा कि हमारी सरकार ने प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत अभी तक 04 करोड़ पक्के घरों का निर्माण किया है और अब हमने अपने संकल्प पत्र के माध्यम से 03 करोड़ घर और बनाने का संकल्प लिया है। मोदी सरकार ने जन धन योजना, पीएम गरीब कल्याण योजना, हर घर जल योजना, स्मार्ट सिटी नमामि गंगे योजना के अलावा वंदे भारत ट्रेन, 80 नए एयरपोर्ट, संसद में महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण और नए संसद भवन की सौगात भी देश के लोगों को दी है। उत्तराखंड के कैबिनेट मंत्री और भाजपा के स्टार प्रचारक सतपाल महाराज ने कहा है कि बतौर रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह के कार्यकाल में भारत का रक्षा तंत्र आज पहले से कहीं अधिक मजबूत है, क्योंकि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार इसे भारतीयता की भावना के साथ मजबूत करने पर ध्यान केंद्रित कर रही है। रक्षा विनिर्माण में आत्मनिर्भरता हासिल करने के लिए रक्षा मंत्रालय द्वारा उठाए गए सुधारात्मक कदमों का जिक्र करते हुए श्री महाराज ने कहा कि उत्तर प्रदेश और तमिलनाडु में रक्षा औद्योगिक गलियारों की स्थापना सरकार का एक बड़ा कदम है।

यात्री दल और पुलिस कर्मियों में हुई कहासुनी

रुद्रप्रयाग : केदारनाथ यात्रा के लिए सोनप्रयाग में लाइन व्यवस्था पर खड़े एक यात्री दल की गुरुवार को यहां तैनात पुलिस कर्मियों से कहासुनी हो गई। मामला इतना आगे पहुंचा कि दोनों में हाथापाई की नौबत आ गई। पुलिस और यात्री दल में धक्का-मुक्की हुई। हालांकि पुलिस ने मामला नियंत्रित तो कर दिया किंतु इस घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। वहीं पुलिस ने वीडियो पर त्वरित प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि यात्री दल द्वारा लाइन व्यवस्था को तोड़ा गया और पुलिस जवान से अभद्रता और हाथापाई की गई। उक्त व्यक्ति के खिलाफ कार्यवाही की जा रही है। जानकारी के अनुसार गुरुवार सुबह शटल सेवा के लिए सोनप्रयाग बाजार से पहले ही यात्रियों की लम्बी लाइन लगी थी। ऐसे में पुलिस द्वारा लाइन व्यवस्था बनवाई जा रही है ताकि बेहतर व्यवस्था बन सके। बताया जा रहा है कि इसी बीच 30-40 लोगों के एक यात्री दल ने लाइन तोड़ने का प्रयास किया। एक यात्री द्वारा पुलिस से अभद्रता भी की गई। पुलिस ने लाइन बनाने का आग्रह किया तो दोनों के बीच कहासुनी हुई और हाथापाई की नौबत आ गई। हालांकि बाद में पुलिस ने मामला नियंत्रित कर दिया, किंतु घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है, जिसमें यात्री दल द्वारा पुलिस से मारपीट करने का प्रयास किया जा रहा है। इधर, मामले पर पुलिस उपाधीक्षक हर्षवर्द्धनी सुमन ने बताया कि गुरुवार को कोतवाली सोनप्रयाग क्षेत्र में शटल पार्किंग जाने के लिए पुलिस स्तर से यात्रियों को कतारबद्ध कराते हुए लाइन में लगने के लिए अनाउंसमेंट कर व्यवस्था बनाई जाती है।

गोपीनाथ मंदिर से ग्रीष्मकालीन प्रवास के लिये रवाना हुई भगवान रुद्रनाथ की उत्सव डोली

18 मई को ग्रीष्मकाल के लिए खुलेंगे भगवान रुद्रनाथ मंदिर के कपाट

जयन्त प्रतिनिधि। चमोली : पंच केदारों में चतुर्थ केदार भगवान रुद्रनाथ के कपाट खुलने की प्रक्रियाओं के तहत गुरुवार को भगवान की उत्सव डोली गोपीनाथ मंदिर से रुद्रनाथ मंदिर के लिये रवाना हो गई है। गोपीनाथ मंदिर से उत्सव डोली सेना की बैंड धुनों के साथ ही अपने सैकड़ों भक्तों के साथ उच्च हिमालयी क्षेत्र के लिए रवाना हुई। यहां भगवान रुद्रनाथ के ग्रीष्मकालीन प्रवास को प्रस्थान के दौरान सैकड़ों भक्तों ने गोपीनाथ मंदिर प्रांगण में दर्शन कर पूजा-अर्चना की। उच्च हिमालय में स्थित चतुर्थ केदार रुद्रनाथ मंदिर के कपाट आगामी 18 मई को ब्रह्म मुहूर्त में विधि विधान से ग्रीष्मकाल के लिए खोल दिये जाएंगे। गुरुवार को यात्रा ल्वींटी बुग्याल में रात्रि प्रवास करेंगी।

गोपीनाथ मंदिर परिसर में गुरुवार को पुजारी आचार्य वेद प्रकाश भट्ट ने भगवान रुद्रनाथ की चल विग्रह मूर्ति का अभिषेक और वैदिक मंत्रों के साथ पूजा-अर्चना की।

इस दौरान स्थानीय ग्रामीणों ने भगवान रुद्रनाथ को नौ-नाज (नया अनाज) अर्पित कर पूजा अर्चना कर कुशलता की मनौतियां मांगी। जिसके पश्चात यहां भगवान रुद्रनाथ को पुजारियों द्वारा भोग लगाने के पश्चात भगवान रुद्रनाथ उत्सव डोली ने अपने शीतकालीन गद्दी स्थल के अधिष्ठाता गोपीनाथ भगवान से विदा लेकर उच्च हिमालयी क्षेत्र के प्रस्थान किया।

यात्रा मार्ग से लेकर केदारनाथ धाम तक निरंतर हो रही सफाई

जयन्त प्रतिनिधि।

रूद्रप्रयाग : ग्यारहवें ज्योतिर्लिंग श्री केदारनाथ धाम में दर्शन करने पहुंच रहे तीर्थ यात्रियों को साफ-सुथरा वातावरण उपलब्ध हो, इसके दृष्टिगत जिला पंचायत, नगर पालिका, नगर पंचायत एवं सुलभ इंटरनेशनल द्वारा अपने-अपने क्षेत्रांतर्गत निरंतर बेहतर साफ-सफाई की व्यवस्था पर्यावरण मित्रों द्वारा की जा रही है। अधिशासी अधिकारी नगर पंचायत केदारनाथ चंद्रशेखर चैधरी ने बताया कि श्री केदारनाथ धाम में दर्शन करने आ रहे तीर्थ यात्रियों को साफ-सुथरा वातावरण उपलब्ध हो, इसके लिए नगर पंचायत केदारनाथ के पर्यावरण मित्रों द्वारा केदारनाथ धाम में निरंतर साफ-सफाई व्यवस्था की जा रही है। इसके साथ ही आने वाले तीर्थ यात्रियों को भी पर्यावरण के संरक्षण एवं संवर्द्धन के लिए प्लास्टिक का उपयोग न करने एवं जो भी कूड़ा-कचरा उनके द्वारा किया जा रहा है उसको डस्टबिन में डालने के लिए जागरूक किया जा रहा है। इसके साथ ही जो भी दुकानदार एवं यात्री गंदगी करते हुए पकड़ा जाता है तो उनके विरुद्ध नियमानुसार कार्यवाही की जा रही है। अपर मुख्य अधिकारी जिला पंचायत सोबन सिंह कठैत ने बताया कि जिला पंचायत के पर्यावरण मित्रों द्वारा जिला पंचायत के विभिन्न क्षेत्रों में निरंतर साफ-सफाई व्यवस्था की जा रही है। बताया कि गुरूवार को पर्यावरण मित्रों द्वारा जवाड़ी बाइपास से लेकर भटवाड़ीसैण तक सफाई व्यवस्था कराई गई तथा सफाई के दौरान एकत्रित कूड़े का उचित निस्तारण किया जा रहा है।

यात्रियों के लिए डीडीआरएफ, एसडीआरएफ एवं सेक्टर अधिकारी की टीमें बनी देवदूत

जयन्त प्रतिनिधि। रूद्रप्रयाग : श्री केदारनाथ धाम दर्शन करने पहुंच रहे किसी तीर्थ यात्री का स्वास्थ्य खराब होने एवं घायल होने की स्थिति में केदारनाथ यात्रा मार्ग में तैनात डीडीआरएफ, एसडीआरएफ एवं सेक्टर अधिकारी की टीमें देवदूत बनी हैं, जो बीमार एवं घायल व्यक्तियों को तत्काल यात्रा मार्ग में तैनात की गई एमआरपी में उपचार हेतु पहुंचाया ही नहीं जा रहा है बल्कि उनके जीवन को भी बचाया जा रहा है। जिला आपदा प्रबंधन अधिकारी नंदन सिंह रजवार ने बताया कि सेक्टर अधिकारी भीमबली ने अवगत कराया है कि छोटी लिनचोली में एक यात्री का स्वास्थ्य अति खराब है जो चलने में असमर्थ है। सूचना मिलते ही यात्रा पड़ाव भीमबली में तैनात डीडीआरएफ की टीम द्वारा त्वरित कार्यवाही करते हुए मौके पर पहुंचकर घायल यात्री को एमआरपी छोटी लिनचोली से एमआरपी भीमबली लाया गया। प्राथमिक उपचार के बाद यात्री को गौरीकुंड के लिए रैफर किया गया तथा डीडीआरएफ एवं एसडीआरएफ की टीम द्वारा उपचार हेतु गौरीकुंड लाया गया। जहां चिकित्सकों द्वारा बताया गया कि उक्त यात्री की स्थिति सामान्य है। भैरों मंदिर के पास एक यात्री की अचानक तबियत खराब होने पर डीडीआरएफ की टीम जंगलचट्टी द्वारा यात्री का रेस्क्यू कर गौरीकुंड अस्पताल उपचार हेतु पहुंचाया गया। उन्होंने बताया कि गौरीकुंड गेट के ऊपर किसी यात्री द्वारा सूचना प्राप्त हुई कि एक महिला यात्री केदारनाथ दर्शन करने घोड़े से जा रही थी महिला यात्री घोड़े से गिरने के कारण घायल हो गई जिसे सूचना प्राप्त होते ही डीडीआरएफ की टीम द्वारा मौके पर पहुंचकर उक्त महिला (शकुंतला देवी उम्र 65 वर्ष निवासी इंदौर, मध्य प्रदेश) को स्ट्रेचर के माध्यम से गौरीकुंड लाया गया। जिसका चिकित्सकों द्वारा प्राथमिक उपचार करने के बाद महिला को सोनप्रयाग चिकित्सालय के लिए रैफर किया गया। उन्होंने बताया कि थारू कैंप के पास घोड़े की टक्कर से एक यात्री के घायल होने पर छोटी लिनचोली आरएमपी ले जाया गया जहां उसे त्वरित उपचार दिलाया गया। व्यक्ति का स्वास्थ्य ठीक है। यात्रा मार्ग में तैनात सभी सुरक्षा बल की टीमें अपने दायित्वों का निर्वहन बड़ी कुशलता से करते हुए बीमार एवं घायल यात्रियों को सूचना प्राप्त होते ही तत्काल उपचार हेतु नजदीकी एमआरपी में पहुंचाकर यात्रियों को त्वरित गति से उपचार दिलाते हुए उनकी जान को बचाया जा रहा है।

छात्रों ने जानी एयरोस्पेश की बारीकियां

देहरादून। उत्तरांचल विवि के उत्तरांचल प्रौद्योगिकी संस्थान में गुरुवार को एयरोस्पेस इंजीनियरिंग पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें छात्रों को अन्वेषण और प्रणोदन प्रणाली के बारे में बारीकी से बताया गया। इस अवसर पर सैपिएन्ज़ा विश्वविद्यालय इटली के प्रोफेसर डॉ. एंटोनेला इंजेनिटो ने एयरो स्पेश इंजीनियरिंग में पर्यावरण अनुकूल प्रणालियों और वस्तुओं के इस्तेमाल पर जोर दिया। कहा कि इसके लिए हाइड्रोजन पेरोक्साइड एकमात्र वास्तविक टिकाऊ विकल्प है, जो अब उचित मूल्य सुलभ है और कई वर्षों से वैज्ञानिक रूप से मान्य है। इस दौरान छात्रों में जागरूकता बढाने के साथ पर्यावरण के अनुकूल प्रणोदन प्रणाली विकसित करने और शिपिंग क्षेत्र के निर्माण पर भी चर्चा हुई। इस दौरान यूआईटी के डीन डा. एसडी पांडे, एयरोस्पेस के एचओडी डॉ. सचिन श्रीवास्तव, कंप्यूटर साइंस के एचओडी डॉ. सुमित चौधरी, मैकेनिकल के एचओडी डॉ. संजीव कुमार जोशी, प्रथम वर्ष के समन्वयक डॉ. एसके शाह और एयरोस्पेस के सह–समन्वयक डॉ. सूर्य प्रकाश गैरोला सहित कई लोग मौजूद रहे।

बदहाल स्वास्थ्य सेवाओं से आम लोग परेशान

रुद्रप्रयाग : सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र अगस्त्यमुनि की बदहाल स्वास्थ्य व्यवस्थाओं से आम लोगों को परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। एक्सरे मशीन अधिकांश समय खरब पड़ी रहती है, जबकि कई बार लो वोल्टेज की समस्या के कारण कई जरूरी कार्य नहीं हो पा रहे हैं।

मजबूरी में मरीजों को 17 किलोमीटर दूर जिला चिकित्सालय जाना पड़ रहा है। इस समस्याओं को लेकर गुरुवार को अगस्त्यमुनि के व्यापारियों के एक शिष्टमंडल ने सीएचसी के चिकित्साधीक्षक से वार्ता की। सीएचसी में फैली अव्यस्थाओं पर व्यापार संघ के प्रांतीय संगठन मंत्री शत्रुघ्न सिंह नेगी के नेतृत्व में एक शिष्टमंडल ने सीएचसी के चिकित्साधीक्षक डॉ. विशाल वर्मा से मुलाकात की। बताया कि सीएचसी अगस्त्यमुनि केदारघाटी की एक लाख से अधिक जनसंख्या की लाइफ लाइन है, किंतु इसकी व्यवस्था पटरी से उतरी है। एक्सरे मशीन अक्सर खराब रहती है, जिससे मरीजों को दिक्कतों का सामना करना पड़ता है, वहीं कई बार लो वोल्टेज के कारण भी समस्या पैदा हो रही है। जनवरी माह में केदारनाथ विधायक के साथ हुई बैठक में भी यह मुद्दा उठाया गया। तब भले ही अस्पताल प्रशासन ने सभी दिक्कतों को दूर करने का भरोसा दिया था। वार्ता के दौरान चिकित्साधीक्षक डॉ. वर्मा ने बताया कि एक्सरे मशीन के खराब होने की सूचना मेटनेंश कंपनी को दे दी गई है। बुधवार को बैटरी की समस्या का समाधान हो गया था, किंतु सॉफ्टवेयर की दिक्कत आने से यह दिक्कत हुई जिसे जल्द ही एक्सपर्ट के आने पर दूर किया जाएगा।

चारधाम यात्रा प्रबंधन को लेकर विपक्ष ने उठाए सवाल

देहरादून। कांग्रेस के वरिष्ठ प्रदेश उपाध्यक्ष सूर्यकांत धस्माना ने आरोप लगाया है कि सरकार चारधाम यात्रा प्रबंधन को लेकर अपनी नाकामी छुपाने के लिए, पत्रकारों पर मुकदमें दर्ज कर रही है। गुरुवार को कांग्रेस भवन में पत्रकारों से बातचीत में धस्माना ने कहा कि कांग्रेस फरवरी महीने से ही राज्य सरकार से चार धाम यात्रा की व्यवस्थाओं को चाक चौबंद करने की मांग कर रही थी। उन्होंने खुद इस संबंध में मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी को सुझाव पत्र सौंपा था। लेकिन यात्रा के प्रथम सप्ताह में ही सरकार की तैयारियों की पोल खुल गई है, उस पर यात्रियों की मौत की खबरें चिंता पैदा करने वाली हैं। उन्होने कहा कि जून में छुट्टियां शुरू होने पर यात्रा में और भीड़ बढ़ सकती है, ऐसे में सरकार नहीं जागी तो आगे और मुश्किल हो सकती है। धस्माना ने कहा कि सरकार अपनी नाकामी छुपाने के लिए, यात्रा कुप्रबंधन की खबरें छापने वाले पत्रकारों पर मुकदमा दर्ज कर रही है। पत्रकार वार्ता में प्रदेश कांग्रेस के प्रवक्ता शीश पाल सिंह भी उपस्थित रहे ।

माहरा ने उठाए प्रबंधन पर सवाल

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष करन माहरा ने बयान जारी करते हुए चारधाम यात्रा प्रबंधन पर सवाल उठाए हैं। करन माहरा ने कहा कि गंगोत्री धाम में गंगा सप्तमी पर्व पर सरकारी अव्यवस्था के कारण जाम की स्थिति का सामना करना पड़ा। उन्होंने कहा कि समय पर इलाज नहीं मिलने के कारण कुछ यात्रियों की मौत भी हुई है। करन माहरा ने कहा कि एक तरफ मुख्य सचिव धामों में वीआईपी की व्यवस्था खत्म होने का आदेश जारी कर रहे हैं, वहीं प्रदेश में वीआईपी परिवार सहित धामों में दर्शन के लिए जा रहे हैं।

ऑनलाइन रिव्यू कर कमाई के झांसे में गंवा दिए 3.06 लाख

देहरादून। ऑनलाइन सर्च इंजन गूगल पर वेबसाइट की रेटिंग देकर कमाई के झांसे में युवती 3.06 लाख रुपये गंवा बैठी। युवती की तहरीर पर बुधवार को नेहरू कॉलोनी थाना पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। एसओ नेहरू कॉलोनी मोहन सिंह ने बताया कि प्रगति भट्ट निवासी कुंज विहार, बंजारावाला ने तहरीर दी। कहा कि उसके मोबाइल पर एक अनजान नंबर से मैसेज किया गया। झांसा दिया गया कि ऑनलाइन वेबसाइट की रेटिंग कर वह घर बैठे कमाई कर सकती है। पीड़िता झांसा में आ गई। पहले वेबसाइट की रेटिंग की तो 200 रुपये का भुगतान किया गया। इसके बाद टेलीग्राम ग्रुप में जोड़कर वहां बल्क में टास्क दिए गए। पहले एक हजार रुपये लगाकर टास्क पूरे किए तो 1300 रुपये मिले। इसके बाद तीन हजार रुपये लगाकर अगले छह टास्क पूरे किए तो 4200 रुपये दिए गए। इसके बाद पीड़िता को अगले टास्क में रकम लगाने पर उसमें गलती करने की बात कहते हुए रकम जमा करवानी शुरू कर दी। इस तरह झांसे में लेकर पीड़िता से कुल 3.06 लाख रुपये की ठगी की गई। एसओ मोहन सिंह ने बताया कि तहरीर पर अज्ञात साइबर ठगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर जांच की जा रही है।

शराब ठेके के खिलाफ स्थानीय लोगों का प्रदर्शन

देहरादून। नारी शक्ति सामाजिक संगठन व एनएसयूआई ने कुवांवाला में शराब का ठेका खोले जाने के खिलाफ गुरुवार को ठेके के सामने प्रदर्शन किया। इस दौरान उन्होंने सरकार के खिलाफ नारेबाजी भी की।

इस अवसर पर भारतीय राष्ट्रीय छात्र संगठन के जिलाध्यक्ष प्रकाश नेगी ने कहा कि ठेकों का विस्तारण किया जाना सरासर ग़लत है। ख़ासकर उन इलाक़ो में जहां युवा आबादी और महिला आबादी ज्यादा रहती है। कहा कि ठेका सीआईएमएस कालेज व सरकारी स्कूल के पास खोला गया है। जिससे युवाओं पर बुरा असर पड़ेगा। इलाके में महिलाओं व बुजुर्गों के साथ बच्चों की सुरक्षा भी खतरे में आ जाएगा।

घाट का निर्माण करवाने की मांग को डीएम से मिले ग्रामीण

नई टिहरी : गंगोत्री सामाजिक संस्था से जुड़े लोगों ने गुरुवार को डीएम मयूर दीक्षित से मुलाकात कर जनपद के गांव तेवाड़ के मरूड़ा तोक के निकट दाह संस्कार के लिए घाट बनाने की मांग की। पत्र के माध्यम से अवगत कराया कि ग्रामीण बीते साल जुलाई से यहां पर घाट निर्माण की मांग कर रहे हैं, लेकिन इस पर आज तक कार्रवाई नहीं हो पाई है। बताया कि टिहरी झील बनने के बाद गांव के घाट डूब गये, लेकिन नये घाटों का निर्माण न होने से ग्रामीणों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। डीएम दीक्षित ने त्वरित कार्यवाही करते हुए टीएचडीसी को मरूड़ा तोक के निकट ग्रामीणों की सुविधा के लिए घाट बनाने के निर्देश दे दिये हैं। इस मौके पर गंगोत्री सामाजिक संस्था के अध्यक्ष गंभीर सिंह नेगी, श्रीराम डबराल, धर्मपाल, बासवा नंद आदि मौजूद रहे। (एजेंसी)

चारों धामों में मंदिर परिसर के 200 मीटर में मोबाइल पर बैन

देहरादून। चारों धामों में मंदिर परिसर के 200 मीटर की सीमा में मोबाइल फोन के उपयोग पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। धामों में रील बना कर भ्रामक सूचनाएं फैलाने वालों के खिलाफ सीधे एफआईआर दर्ज कराई जाएगी। ऐसे में धामों में अब श्रद्धालु न मोबाइल का इस्तेमाल कर पाएंगे और न ही सोशल मीडिया प्लेटफार्म के लिए रील बना पाएंगे। मुख्य सचिव राधा रतूड़ी ने गुरुवार को निर्देश जारी करते हुए पुलिस को सख्ती के साथ आदेशों का पालन सुनिश्चित कराने को कहा। मुख्य सचिव राधा रतूड़ी ने कहा कि चारों धामों में इस बार पिछले सालों की तुलना में कहीं अधिक श्रद्धालुओं की भीड़ आ रही है। इस बढ़ती भीड़ के कारण धामों में दिक्कतें न हों, इसके लिए धामों में भीड़ को नियंत्रित किया जा रहा है। धामों में मंदिर परिसर में मोबाइल से फोटो खींचने, विडियो बनाने में श्रद्धालु काफी समय लगा रहे हैं। इसके कारण धाम के आस पास अनावश्यक भीड़ हो रही है। कहा कि इसी भीड़ को नियंत्रित करने को धामों की 200 मीटर की सीमा में किसी भी तरह के मोबाइल फोन का इस्तेमाल नहीं किया जा सकेगा। धामों में आकर रील बना कर लोग गलत संदेश दे रहे हैं। ये एक तरह का जुर्म है। ऐसा करने वालों के खिलाफ भी एफआईआर दर्ज कराई जाएगी। यात्रा के लिए जाने वाले आस्था, श्रद्धा के साथ आते हैं। जो लोग रील बना रहे हैं, उससे साफ है कि वो श्रद्धा, आस्था से नहीं आ रहे हैं।

ऑफलाइन पंजीकरण पर रोक 19 मई तक बढ़ाई

देहरादून। चार धाम यात्रा में ऑफलाइन पंजीकरण की व्यवस्था पर रोक 19 मई तक बढ़ा दी गई है। पहले ऑफलाइन पंजीकरण पर रोक 16 मई तक तय की गई थी। ऑनलाइन पंजीकरण कराने वाले श्रद्धालुओं की बढ़ती संख्या और धामों में बढ़ती भीड़ को देखते हुए पर्यटन विभाग ने ये फैसला लिया। गुरुवार को सचिव पर्यटन सचिन कुर्वे की ओर से ऑफलाइन पंजीकरण पर रोक 19 मई तक बढ़ाने के निर्देश दिए गए। चार धाम यात्रा के लिए पर्यटन विभाग ने ऑनलाइन के साथ ही कुछ सीमित संख्या में ऑफलाइन पंजीकरण का भी विकल्प रखा है। इसके लिए हरिद्वार और ऋषिकेश में ऑफलाइन पंजीकरण काउंटर बनाए गए हैं। धामों में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ को देखते हुए पहले ऑफलाइन पंजीकरण 16 मई तक के लिए बंद रखे गए। अब धामों में पहले से ही पंजीकृत श्रद्धालुओं की सुरक्षा और सुविधा को ध्यान में रखते हुए ऑफलाइन पंजीकरण पर रोक की तारीख को 19 मई तक के लिए बढ़ाया गया। सचिव पर्यटन ने साफ किया कि धामों में दर्शन को पंजीकरण अनिवार्य किया गया है। इस व्यवस्था के तहत श्रद्धालु अपनी पंजीकृत तारीख पर ही धामों में दर्शन को पहुंचे। श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए ही धामों में टोकन और स्लॉट सिस्टम की व्यवस्था सुनिश्चित की गई है।

पंजीकरण का आंकड़ा 27.92 लाख के पार

चारों धामों में श्रद्धालुओं के पंजीकरण का आंकड़ा 27.92 लाख के भी पार पहुंच गया है। गुरुवार तक कुल 2792679 पंजीकरण हो चुके हैं। इसमें से 1.41 लाख पंजीकरण ऑफलाइन हुए हैं। सबसे अधिक 9.36 लाख पंजीकरण केदारनाथ, 8.52 लाख बदरीनाथ, 4.99 लाख गंगोत्री, 4.39 लाख यमुनोत्री धाम में पंजीकरण हुए हैं। हेमकुंड साहिब में 63911 श्रद्धालुओं के पंजीकरण हो चुके हैं।

पारिवारिक संपत्ति फर्जीवाड़े से बेचने का आरोप

देहरादून। पारिवारिक संपत्ति के एक हिस्से की फर्जी एनओसी लगाकर बेचने का मामला सामने आया।

न्यायालय के आदेश पर कैंट थाना पुलिस ने बुधवार को मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।प्रकरण को लेकर गद्दूवाला, गल्जवाड़ी निवासी मोहित ने तहरीर दी। बताया कि वह होटल में नौकरी करता है और अक्सर घर से बाहर रहता है। उसका भाई भी मुंबई में नौकरी करता है। कोर्ट में अपील करते हुए कहा कि गद्दूवाला में अन्य खातेदारों संग संयुक्त जमीन है।

जयन्त
संस्थापक
स्व.नरेन्द्र उनियाल
प्रकाशक,मुद्रक और स्वामी
नागेन्द्र उनियाल द्वारा प्रतिभा प्रेस से मुद्रित तथा बद्रीनाथ मार्ग कोटद्वार (गढ़वाल) से प्रकाशित
–सम्पादक
नागेन्द्र उनियाल
आर.एन.आई. 35469/79
फोन/फैक्स 01382–222383
मो. 8445596074, 9412081969
e-mail:
nagendra.uniyal@gmail.com